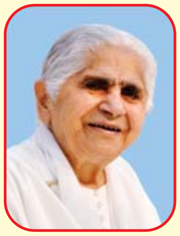

नव वर्ष के प्रति दादी जानकी जी का शुभ संदेश

दैवी विश्व के रचयिता, परम शिक्षक, परम सद्‌गुरु भोलानाथ शिवबाबा की अति प्रिय सन्तान – भाइयो और बहनो,

नवयुग की झलक दिखाने वाले, नए दैवी संस्कार-स्वभाव निर्माण की प्रेरणा देने वाले, आत्मा में नव उमंग-उत्साह का संचार करने वाले नव वर्ष की आप सभी हर्षितमूर्त, शक्तिमूर्त, प्रेममूर्त आत्माओं को बहुत-बहुत बधाइयाँ हों।

कलियुग के अन्त और सतयुग के आगमन के संगमकाल की वर्तमान घड़ियाँ अति महत्वपूर्ण हैं। भोलानाथ भगवान शिव अवतरित हो सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान दे रहे हैं। इसी ज्ञान खज़ाने से आत्मा कमल समान पवित्र, शक्तिशाली, दिव्यगुण संपन्न तथा बन्धनमुक्त बन जाती है। समय की पुकार है, हम तीव्र पुरुषार्थी बनें। इसके लिए ध्यान रखें कि जैसा संकल्प हम करेंगे, वैसा ही वातावरण बनेगा। ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों को समय अनुसार सेवा में प्रयोग करते हुए असंभव को भी संभव कर दिखाएँ। एक बल एक भरोसे के आधार पर पवित्रता रूपी स्वधर्म में टिके रहें। पवित्रता ही सुख-शान्ति की जननी है।

वरदाता भगवान शिव से हमें अनेकानेक वरदान मिले हैं। हम अपनी वृत्ति द्वारा वृत्तियों को परिवर्तन करने की सेवा करें। शक्तिशाली मनसा सेवा द्वारा निर्विघ्न वायुमण्डल बनाएँ। अपने सर्व बोझ पिता परमात्मा को देकर सदा मुसकराते रहें।

मैं सारी दुनिया को कहती हूँ, कल किसने देखा, जो करना है अब कर लें। विनाश के पहले स्थापना का काम स्वयं भगवान करा रहा है। जो करना है, अब करेंगे तो उसका कई गुणा फायदा मिलेगा। अब नहीं तो कब नहीं।

तो आइये परिवर्तन की इस नूतन वेला में संस्कार मिलन की रास करते हुए, एक-दो के हाथ में हाथ देकर, परमात्मा पिता की शक्तियों को साथ लेकर जीवन की परम ऊँचाइयों को छू लें।

आप सभी को नव वर्ष की, नवयुग की, पुरुषार्थ में नवीनता की, सेवा की नवीन योजनाओं की बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो!

आपकी दैवी बहन
बी.के.जानकी

अमृत-सूची

◈ अगणित गुणों से सम्पन्न ब्रह्मा बाबा *(संजय की कलम से)*............. 4
◈ पिताश्री द्वारा युवा पीढ़ी का *(संपादकीय)* 5
◈ मेरे बच्चे रूहानी (कविता)......6
◈ बाबा मुझे लाइट के शरीर 7
◈ श्रद्धांजलि......................11
◈ बाबा ने कहा, बहादुर बच्ची है.12
◈ जब...बाबा ने जगायी 14
◈ कैसे हुई मुरली लिखने की 15
◈ कलावान बनाने वाले बाबा.....16
◈ आत्मा के गुणों का गहरा 17
◈ जेल बन गयी रूहानी.......... 18
◈ हर संकल्प पूरा किया. 19
◈ प्यारे बाबा ने मुझे 21
◈ चित्तचोर के चरित्र.............23
◈ सर्व रिश्तों का प्यार पाया......25
◈ नव वर्ष *(कविता)* 29
◈ ''ज्ञानामृत'' से बदला जीवन...30
◈ सचित्र सेवा समाचार 32

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क '**ज्ञानामृत**' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
: omshantipress@bkivv.org

अगणित गुणों से सम्पन्न ब्रह्मा बाबा

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा स्वत: स्फूर्त (जिसके मन में अपने आप ज्ञान के विचार उठें) थे। उन्हें अपने व्याख्यानों के लिए अध्ययन करने या तैयारी करने की आवश्यकता नहीं होती थी। वे विभिन्न दार्शनिक तथा जटिल विषयों को समझाने के लिए उपाख्यान सुनाया करते थे या व्यवहारिक दृष्टान्त उद्धृत किया करते थे। उनके ज्ञान तथा अवबोध (विवेक) की संपदा वस्तुत: अद्‌भुत थी तथा ऐसा लगता था कि वह अपार है। वे पलक मारते ही समस्याओं को सुलझा लेते थे। वे स्पष्टवादी, विनोदप्रिय तथा निर्भीक थे। उनके मन में कोई वर्जनायें नहीं थीं। उनकी तर्कशक्ति का स्पष्ट प्रकाश; संदेह और दुर्भावना को बहा ले जाता था। उनके उपाख्यानों – ''मेंढकों की टर्र-टर्राहट'', ''बन्दरों की किलकिलाहट'', ''भेड़ों की सभा'' आदि को सुनकर लोग मुसकरा उठते थे या कहकहा लगा बैठते थे। उन्हें मर्यादा का अच्छा बोध था, जो कि अच्छी विनोद बुद्धि से ही उपजता है। मीठी मुसकान से, अच्छे मजाक से या दयापूर्ण दृष्टि से भी वे अनेक लोगों को इतनी आत्मानुभूति करा देते थे और उनकी इतनी शुद्धि कर देते थे जितनी कि भय और संयम-नियम से भी संभव नहीं है। वे ऐसे विषय पर भी अपने विचार निर्भीकता से व्यक्त करते थे, जिन्हें कोई अन्य व्यक्ति नाजुक मानता। जहाँ तक उनके दैनिक प्रवचन तथा चिन्तन-कक्षा का प्रश्न है, किसी भी घटना का उस पर प्रभाव नहीं पड़ता था।

एक आदर्श ईश्वरीय छात्र

वे गहन ज्ञानयुक्त उपदेश दे सकते थे, भले ही उन्होंने अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। संभवत: यह हितकर ही था क्योंकि उनका मन किन्हीं भी मत-मतांतरों और मिथ्या अनुकूलन को स्वीकार नहीं करता था। उनमें उच्च शिक्षा प्राप्त मनुष्य होने या विद्वान होने का अभिमान नहीं था। वे स्वयं को हमेशा एक 'छात्र' ही समझते रहे। वे प्रसन्नतापूर्वक कहते थे, ''ईश्वरीय छात्र-जीवन सर्वोत्तम है।'' वे एक आदर्श ईश्वरीय छात्र थे क्योंकि वे ईश्वर के उपदेशों का पालन पूरे हृदय से और निष्ठा से करते थे।

वे उन केसरिया या गेरुआ वस्त्रधारी गुरुओं जैसे नहीं थे, जो कि भारतीय महानगरों में या विदेशों में रहते हैं, जंबो जेट में यात्रा करते हैं और मुक्ति का छोटा उपाय या चिन्तन का नुस्खा बेचते हैं। उन्हें लोगों से दूर जंगलों में रहने में विश्वास नहीं था। वे कहते थे कि स्वाभाविक बनो। वे एक व्यवहारिक विश्व-शिक्षक थे। वे यह जानते थे कि मनुष्य की मुक्ति से, पूर्ण विश्व जो 'संकटग्रस्त' है और पीड़ा से चीख रहा है उसकी समस्या हल नहीं होगी इसलिए वे सभी की शुद्धि के लिए कार्य करते रहे।

वे आलोचकों को मित्र मानते थे

शुद्धता तथा चिन्तन, ज्ञान और अवबोध उनके जीवन के मुख्य दीपक थे। वे सहिष्णुता, अनुकंपा और

शेष पृष्ठ 34 पर

सम्पादकीय

पिताश्री द्वारा युवा पीढ़ी का मनोपरिवर्तन

18 जनवरी, 1969 को पिताश्री पंच-भौतिक देह को त्याग कर अव्यक्त हुए थे। अत: यह तिथि 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' के इतिहास में बहुत ही महत्वपूर्ण तिथि है। स्वाभाविक है कि इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सभी ज्ञान-केन्द्र यह दिन 'ईश्वरीय-स्मृति दिवस' के रूप में मनाते हैं। परन्तु हम कोई साल में एक ही बार इस दिन पिताश्री को याद करें, ऐसा नहीं हैं बल्कि यहाँ तो पिताश्री के आदेश-निर्देश से ही समस्त दैनिक कार्य चल रहे हैं और इस कार्य को सम्पन्न करने हेतु मार्ग-प्रदर्शना के लिए वे अव्यक्त रूप में अर्थात् दिव्य रूप में हमारे बीच पधारते भी हैं। हमारा उनसे सम्पर्क बना ही हुआ है और इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा सतयुगी सृष्टि की पुन:स्थापना के पुण्य कार्य के कर्त्ता-धर्त्ता अभी भी परमपिता शिव तथा पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा ही हैं। केवल इतना ही हुआ है कि स्थूल देह का विसर्जन करके पिताश्री अब सूक्ष्म, दिव्य अथवा अव्यक्त रूप में इसे अधिक तीव्र गति से सम्पन्न कर रहे हैं।

'पवित्र बनो योगी बनो' का युग-परिवर्तनकारी नारा

पिताश्री का जीवन तो दिव्य गुणों की एक असीम और अनंत खान है। उन्होंने युवा पीढ़ी को और विशेष तौर पर कन्या-वर्ग के जीवन को ज्ञान से संजोने में तथा योग द्वारा उज्ज्वल एवं उजागर करने में काफी परिश्रम किया। इसका ही फल है कि आज प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अति विस्तृत कार्य-क्षेत्र में प्राय: जितने भी समर्पित जीवन वाले भाई-बहनें सम्पूर्ण रूप से इसी ईश्वरीय सेवा में तत्पर हैं, वे या तो युवक और युवतियाँ ही हैं या पहले-पहल जब इस कार्य-क्षेत्र में उन्होंने जीवन को जुटाया था तब वे युवा पीढ़ी के ही थे। आज हम देखते हैं कि युवा पीढ़ी का असन्तोष अथवा विद्यार्थियों द्वारा उग्र आन्दोलन समाज के लिए एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है। पिछले कुछ वर्षों में कई देशों में विद्यार्थी आन्दोलनों ने राजनीतिक क्षेत्र में भी काफी उथल-पुथल की है। यह सर्व-विदित है कि आज का युवक आध्यात्मिक ज्ञान में कम रुचि रखता है और फैशन, टी.वी., सिनेमा तथा नशीले और रसीले पदार्थों के सेवन उसे अधिक आकर्षित करते हैं। उसके स्वभाव में उग्रता और तनाव बने ही रहते हैं और रोष तथा असन्तोष समाये ही रहते हैं। अनुमान लगाया जा सकता है कि यह चीज समयान्तर में कितनी खतरनाक सिद्ध हो सकती है। अत: यदि इस पृष्ठ-भूमिका से देखा जाये तो समझ में आ सकता है कि पिताश्री ने नवयुवकों और नवयुवतियों को 'पवित्र बनो और योगी

ज्ञानामृत के सर्व पाठकों को नववर्ष 2018 की कोटि-कोटि शुभ बधाइयाँ

बनो' का युग-परिवर्तनकारी नारा देकर; सतोगुणी, पावन एवं सुखी समाज की स्थापना का झण्डा थमाने का जो कार्य किया, उसमें कितनी दूरदर्शिता, नीति-प्रज्ञा एवं कल्याण की भावना भरी है।

नई पीढ़ी, नई दुनिया के निर्माण-कार्य में तत्पर

आज हरेक राजनीतिक पार्टी और हरेक सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्था चाहती है कि युवा वर्ग, जिसे कि नया रक्त कहते हैं, देश के कार्यों में अधिक जिम्मेवारी से भाग ले और देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाये। परन्तु हो रहा है इसके विपरीत ही। आज के अधिकांश युवक तो तोड़-फोड़ में लगे हैं और जोश तथा आक्रोश या हड़ताल के जंजाल में जकड़े हैं। अत: कमाल ही तो है कि काले युग (कलियुग) के असन्तोष, असहिष्णुता, अनुशासनहीनता और आसुरीयता के इस दौर में बाबा ने इसी वर्ग के लोगों को आस्तिकता का अमृत पिला कर, उन्हें योग के विधि-विधान में इतना तो परिपक्व कर दिया है कि आज न केवल उनकी अपनी दृष्टि-वृत्ति और स्थिति-कृति उच्च तथा अनुकरणीय हो गई है बल्कि इस चीज की चाश्नी उन्हें इतनी प्रिय लग गई है और इस सर्वोत्तम कार्य की धुन ऐसी सवार हो गई है कि वे दूसरों के लिए भी प्रभु-प्रीति एवं पवित्रता का पथ-प्रदर्शन करने के कार्य में तथा नई दुनिया के निर्माण में दिन दुगुनी और रात चौगुनी मेहनत कर रहे हैं।

जोश वालों को दिया होश

पिताश्री कहा करते कि जीवन का यही समय है जब नवयुवक सही मार्ग-प्रदर्शना न मिलने के परिणामस्वरूप अपने जीवन को दाग लगा बैठते हैं। वे कहते थे कि विद्यार्थी-जीवन यों तो जीवन का सर्वश्रेष्ठ भाग है क्योंकि इस काल में उनकी बुद्धि में सांसारिक कार्य-व्यापार की चिन्ताएँ नहीं होतीं परन्तु यदि इस जीवन-काल पर पूरा ध्यान न दिया जाये तो युवक अज्ञानान्धकार-कूप एवं विकार-गर्त में जा गिरते हैं। अत: पिताश्री के पास जब कभी भी इस उम्र का कोई भी व्यक्ति मिलने आता तो वे ऐसा मानकर उसकी अवहेलना न करते कि अभी तो यह नवयुवक अथवा बच्चा है, अभी तो इसके खाने और मौज मनाने के ही दिन हैं, अभी तो यह जवानी की मदहोशी में क्या ज्ञान सुनेगा बल्कि वे उसे पिता-तुल्य स्नेह देकर, उसे ईश्वरीय ज्ञान का महत्व दर्शा कर, उसकी बुद्धि में ज्ञान का उजाला लाकर तथा उसे प्रभु-प्रेम का प्याला पिला कर, उसके जीवन को एक नया मोड़ दे देते। पिताश्री कहा करते कि नया रक्त तो सतयुग में देवी-देवताओं ही का होता है। आज तो बाल-वृद्ध सभी का रक्त वास्तव में पुरानी पीढ़ी ही का रक्त है क्योंकि अब कलियुग का काला दौर चल रहा है। परन्तु वे युवा पीढ़ी के तथा छोटे बच्चों के उद्बोधन-कार्य को पूर्ण महत्व अवश्य देते। इस प्रकार, जोश वालों को होश देकर तथा स्वभाव की गर्मी वालों को देश के गौरव और अध्यात्म की गरिमा समझा कर वे उन्हें एक नया जीवन देते और उसमें नया उल्लास भर देते।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

मेरे बच्चे रूहानी

ब्रह्माकुमार डॉ.महाराज सिंह त्यागी,
सादाबाद, हाथरस (उ.प्र.)

मैं कब तक सुनाऊँगा अव्यक्त वाणी।
फरिश्ते बनो, मेरे बच्चे रूहानी।।

ये तेरे और मेरे की बातों को छोड़ो।
तजो व्यर्थ चिन्तन, मेरे बच्चो, दौड़ो।।
न रेंगो, उड़ो, मेरे बच्चो रूहानी।
फरिश्ते बनो....................

इन्तजार क्यों करते हो अंतिम समय का।
इन्तजाम तुम कर लो, अब अपनी चलन का।।
महादानी बनो और बनो वरदानी।
फरिश्ते बनो....................

ब्रह्मा बाबा का अंतिम समय का ये कहना।
निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी हो रहना।।
करो फालो ब्रह्मा बाबा की कहानी।
फरिश्ते बनो, मेरे बच्चे रूहानी।।

बाबा मुझे लाइट के शरीर वाले दिखाई दिए

* ब्रह्माकुमारी सुदेश, जर्मनी

मेरा लौकिक जन्म दिल्ली में उच्च शिक्षा प्राप्त परिवार में हुआ। बाल्यकाल से ही मेरी रुचि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने, मंदिरों में जाकर व्रत एवं पूजन करने में अधिक थी। भगवान कौन है और कहाँ है, यह प्रश्न सदा मन में उठता था जिससे भगवान को पाने की तीव्र इच्छा बनी रहती थी। मुझे लौकिक पढ़ाई के साथ-साथ समाज-सेवा करने का बहुत ही शौक था। मेरा लक्ष्य था कि पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं समाज-सेविका बनूँगी। जब मैं कॉलेज में पढ़ने जाती थी तो रास्ते में हरिजनों की छोटी बस्ती थी। उनका जीवन सुधारने के लिए मैं अच्छी-अच्छी बातें सुनाती थी लेकिन परिवर्तन न दिखाई पड़ने से कभी दिलशिकस्त भी हो जाती थी, तो कभी दुविधा में पड़ जाती थी कि ऐसी सेवा करें या नहीं।

वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ा

पवित्रता मुझे अच्छी लगती थी। मैं स्वतंत्र रहकर समाज-सेवा करना चाहती थी। एक दिन मुझे मेरी मासी ने कहा कि यहाँ दिल्ली में एक ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय है, वहाँ जाने से तुम अपने लक्ष्य को पूरा कर सकोगी, मैं भी वहाँ जाती हूँ, वहाँ की बहनों का जीवन पवित्र है, जिनको वे देखती हैं, वे पवित्र बन जाते हैं। यह बात सुनकर मैंने वहाँ जाना चाहा। सन् 1957 में दादी प्रकाशमणि जी राजोरी गार्डन सेवाकेन्द्र पर रहती थीं। एक दिन शाम को मैं अपने भाई के साथ घूमने निकली तो ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय की शाखा में चली गई। वहाँ दादी जी मुझे मिलीं, मैं उनकी आँखों में देखते हुए बात करती रही। उन्होंने कहा कि यहाँ ईश्वरीय ज्ञान और योग की शिक्षा दी जाती है। उतने में मुझे भाई ने बुला लिया लेकिन वहाँ के वातावरण ने तथा दादी जी के साथ की बातचीत ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला।

एकदम सचेत थी मैं

थोड़े दिनों के बाद राजोरी गार्डन में ब्रह्मा बाबा आए। मेरी एक सहेली ने मुझे मुरली सुनने के लिए निमंत्रण दिया। जब मैं वहाँ गई तो पता चला कि मुरली सुनने के लिए केवल नियमित विद्यार्थी ही बैठ सकते हैं। मैंने कहा कि मेरी मासी प्रकाश बहन से मैंने कुछेक ज्ञान की बातें सुनी हैं तो मुझे क्लास में बैठने की स्वीकृति दी गई। मुझे आँखें बंद करके बैठने का भक्ति वाला संस्कार था, वैसे ही मैं वहाँ बैठ गई। फिर मैंने सोचा, यहाँ कोई भजन-कीर्तन तो हो नहीं रहा है इसलिए आँखें खोलकर देखा तो सामने लाइट के शरीर वाला व्यक्ति दिखाई दिया। फिर सोचा कि लाइट के शरीर वाला व्यक्ति तो कोई होता नहीं है अतः आँखें पुनः बंद कर लीं। आँखें बन्द करने पर अपने चारों ओर चन्द्रमा के प्रकाश का और शीतलता का अनुभव हुआ। थोड़ी देर बाद आँखें खोलकर देखा तो पुनः वही दृश्य दिखाई दिया। मैंने सोचा, सितंबर का महीना है, शाम का समय है और छत पर क्लास होने से सूर्य की किरणें बाबा पर पड़ने से ऐसा दिखाई दिया होगा। मैंने अपने को चुटकी काटी और जानना चाहा कि सचमुच मैं जग रही हूँ या सो रही हूँ लेकिन मैं तो एकदम सचेत थी। फिर मैंने सोचा कि मैं सुनूँ तो सही, बाबा क्या समझा रहे हैं? मुरली में बाबा लाइट के बारे में समझा रहे थे, वो मैं समझी नहीं सिर्फ एक शब्द लाइट समझी। मैंने सोचा कि अजीब व्यक्ति है, दिखाई भी लाइट दे रहा है और लाइट की ही बातें सुना रहा है। फिर हम घर वापस आ गए।

काठ की नहीं, ज्ञान की मुरली

दूसरे दिन जब मासी जी से मिली तो पूछा कि उस व्यक्ति का शरीर लाइट का क्यों दिखाई देता था? तो उन्होंने कहा कि मुरली सुनाते समय शिवबाबा, ब्रह्मा तन में प्रवेश करते हैं

जिससे प्रकाशमय काया अनुभव होती है। दूसरी बात, ब्रह्मा बाबा स्वयं भी अपने पुरुषार्थ से अव्यक्त फरिश्ता सो देवता बनते हैं। तो फरिश्तेपन की स्थिति के प्रभाव से भी लाइट का शरीर दिखाई देता है। मैंने कहा, बंसी तो मैंने सुनी नहीं! मैं समझ रही थी कि कोई काठ की बंसी बजती होगी। उन्होंने कहा, परमात्मा काठ की मुरली नहीं बजाते, वे ब्रह्मा के तन में प्रवेश होकर उनके मुख से जो ज्ञान की मुरली सुनाते हैं उसे ही हम मुरली कहते हैं जिसको धारण करने से हमारा जीवन श्रेष्ठ तथा ऊँचा बनता है। मैंने पूछा, जब भगवान उनके मुख से बोले तब कोई बिजली तो चमकी नहीं, गड़गड़ाहट तो हुई नहीं। उन्होंने कहा, यदि ज्ञान सुनाते समय परमात्मा बिजली की गड़गड़ाहट करें तो ज्ञान सुनाई कैसे देगा? फिर मैंने पूछा, क्या सचमुच सर्वशक्तिवान भगवान उनके तन में प्रवेश होते हैं, भगवान तो हजारों सूर्यों से तेजोमय हैं, क्या ब्रह्मा का शरीर जल नहीं जायेगा? उन्होंने उत्तर दिया, परमात्मा की शक्ति किसी का शरीर नहीं जलाती, वह तो आत्मा के पाप भस्म करती है।

मुरली घर लाकर पढ़ने लगे

मासी जी की बातें सुनकर मेरी रुचि बढ़ती गई क्योंकि एक तो मुझे समाज-सेवा करने का लक्ष्य था, दूसरा, अव्यक्त फरिश्ते रूप का आकर्षण था, तीसरा, ज्ञान सागर परमात्मा शिव, ब्रह्मा तन में प्रवेश होकर कैसे मुरली चलाते हैं वो सीखने की उत्कण्ठा पैदा हुई इसलिए मैंने सेवाकेन्द्र जाने का तय कर लिया था। लौकिक पिता की थोड़ी मना थी सेवाकेन्द्र जाने के लिए। वो कहते थे, कॉलेज में जाकर लौकिक पढ़ाई तो पढ़नी ही है और चाहो तो मुरली घर में लाकर पढ़ो। तत्पश्चात् हम मुरली घर ले जाकर पढ़ते थे।

नयनों से टपके स्नेह के मोती

थोड़े दिनों के बाद बाबा पुनः दिल्ली आए। हम बगीचे में बैठे हुए थे। मुझे किसी बहन ने कहा कि आज बाबा आए हैं और यहाँ ऊपर वाले कमरे में ठहरे हुए हैं। दोपहर का समय था, बाबा आराम कर रहे थे। मैंने निमित्त बनी हुई बहन से पूछा कि क्या मैं अभी बाबा से मिल सकती हूँ? जवाब मिला, अभी नहीं, कल सवेरे मुरली के बाद मिलना। मुझे पता था कि लौकिक पिताजी मुझे सवेरे सेवाकेन्द्र आने नहीं देंगे। मैं फिर से बैठकर मुरली पढ़ने लगी। मुरली को बहुत ध्यान से पढ़ती थी और मुझे पक्का निश्चय हो चुका था कि भगवान ब्रह्मा के तन में आ चुके हैं। तत्पश्चात् योगाभ्यास में बाबा से रूह-रूहान कर रही थी, भगवान, आप परमधाम से नीचे आ कर, ऊपर कमरे में बैठे हैं और यह बहन कहती हैं, कल आना। परन्तु कल मुझे कौन आने देगा! क्या आप नीचे नहीं आ सकते मुझे मिलने के लिए! इतने में देखती हूँ, दूर से बाबा मेरी तरफ आ रहे हैं। मैं दौड़कर बाबा के पास गई और प्यार से कहा 'बाबा'। बाबा ने मुझे स्नेहभरी दृष्टि दी और कहा, 'बच्ची', ऐसे बाबा से मुलाकात हुई । मेरे नयनों से स्नेह के मोती टपक रहे थे। मन-ही-मन कह रही थी कि हे भगवान, आखिर आपने मेरी पुकार सुन ही ली और स्वयं आप मुझे अपना बनाने आए हैं, मैं कितनी खुशनसीब हूँ। फिर बाबा ने कहा, बच्ची कल सवेरे आना, घर से छुट्टी मिल जाएगी।

बाबा से किया ज्ञान वार्तालाप

घर जाकर मैंने माताजी से कहा कि कल मैं कॉलेज जाने के पहले सेवाकेन्द्र पर जाऊँगी तो वे मान गए। दूसरे दिन सवेरे जब वहाँ पहुँची तो बाबा की मुरली पूरी हो चुकी थी। बाबा चेम्बर में बैठकर बड़ी दीदी के साथ बातचीत कर रहे थे। फिर मैंने बाबा के साथ ज्ञान का वार्तालाप किया। ऐसे ज्ञान की गहराई में जाने का चान्स मिलता रहा। कितने सौभाग्य की बात है, जिसके दर्शन के लिए सारा संसार तड़प रहा है, वो हमें पढ़ा रहा है। **बाबा का ज्ञान समझाने का तरीका बहुत ही सरल और रोचक था। दिल करता था, बैठकर सुनते ही रहें। पढ़ाई का शौक होने से मुरली से मेरा प्यार बढ़ता ही गया।**

ज्ञान बुलबुल

मधुबन में रात्रि क्लास में बाबा के आने के पहले कोई न कोई अनुभव सुनाते थे। एक दिन मैं अपना अनुभव सुना रही थी। उतने में पता चला कि बाबा आकर बाहर खड़े हैं। उन

दिनों में बाबा खड़ाऊँ पहनते थे, खड़ाऊँ का आवाज बंद हो गया था। फिर भी मैंने अनुभव सुनाना जारी रखा। बाबा जैसे ही क्लास में आए तो कहने लगे, ज्ञान बुलबुल, क्या गीत गा रही थी? बहुत अच्छा-अच्छा सुना रही थी। इससे मेरा और भी उमंग बढ़ गया। जब मधुबन में नए जिज्ञासु आते थे, तो बाबा कहते थे कि जाओ बच्ची, उन्हों से फार्म भरवाकर लाओ। हम फार्म भरवाकर बाबा के पास ले आते थे। फिर बाबा सिखाते थे कि उन्हें कौन-सी बातें सुनानी हैं और कैसे सुनानी हैं। ऐसे बाबा उमंग-उत्साह दिलाकर ज्ञान-रत्न बांटने के लिए प्रेरित करते थे।

ज्ञान-बादल

जब हम जयपुर में थे तो बाबा से मिलने जल्दी-जल्दी आते थे। बाबा के पास आने के दो-तीन दिन बाद बाबा पूछ लेते थे, बच्ची, कब वापस जा रही हो? एक बार मैंने बाबा से कहा, यहाँ बच्चे सप्ताह या दस दिन तक ठहरते हैं, आप मुझे दो-चार दिन के बाद ही कहने लगते हो, कब वापस जा रही हो? बाबा ने कहा, बच्ची, बाबा सागर है। बादल आते हैं और सागर से भरते हैं, फिर जाकर बरसते हैं। आप भी ज्ञान-बादल हो, भरकर जाओ, ज्ञान-वर्षा करो, फिर आ जाओ।

जयपुर में बाबा ने पहला म्यूजियम बनाया

बाबा ने मुझे दिल्ली से जयपुर म्यूजियम सेवार्थ जाने के लिए टेलिग्राम किया था। मैं जयपुर में सेवा पर उपस्थित हो गई। दिल्ली वाले भाई-बहनों को लगा कि मैं थोड़े समय के लिए ही जयपुर रहूँगी। दिल्ली से आबू जाते समय वो जयपुर उतरे और मुझे कहा कि आप हमारे साथ वापस दिल्ली में सेवा पर चलो। मैंने कहा कि जहाँ बाबा बिठाए, वहाँ ही हम बैठेंगे। आबू जाने के बाद उन्होंने बाबा को कहा कि सुदेश बहन को दिल्ली भेजो, तो बाबा ने कहा कि क्या बाबा बच्ची को हाथी से उतारकर घोड़े पर बिठाएगा? हाँ, बाबा वायदा करता है कि जब दिल्ली में म्यूजियम बनाएंगे तो बाबा बच्ची को वहाँ भेजेगा। कुछ समय बाद मैं जयपुर से माउंट आबू गई। तब तक दिल्ली वालों ने म्यूजियम बनाना शुरू कर दिया था। म्यूजियम पूरा होते ही उन्होंने बाबा को टेलिग्राम भेजा कि बाबा, आपको अपना वायदा याद है? हमने हाथी तैयार कर लिया है। आपने कहा था कि सुदेश को वापस दिल्ली भेजेंगे। बाबा ने मुझे बड़े प्यार से बुलाकर कहा, बच्ची, बाबा तो सदैव बच्चों को आगे बढ़ाना चाहते हैं। अभी आप दिल्ली में म्यूजियम की सेवार्थ जाओ क्योंकि बाप को बच्चों से किया हुआ वायदा पूरा करना ही होगा। फिर तो मैं दिल्ली चली गई।

मैंने बाबा को राखी भेजी

दिल्ली से मैंने एक बार बाबा को राखी भेजी थी, तो बाबा ने एक रूमाल और कुछ पैसे सौगात के रूप में भेजे थे। **साथ में पत्र लिखा था कि बाबा आया है तुम बच्चों को कौड़ी से हीरे तुल्य बनाने, बच्ची, तुम सच्चा हीरा हो, तुम बाबा के नयनों के नूर हो, ऐसा लिखकर नशा चढ़ाया।**

बाबा ने हमें कर्मयोग सिखाया

हम ब्रह्मा बाबा को मधुबन में जब भी चलते-फिरते देखते थे तो वे अव्यक्त फरिश्ता नजर आते थे। चारों ओर दिव्य प्रकाश की रश्मियाँ फैलती हुई दिखाई देती थीं। शिव बाबा के गुण तथा शक्तियाँ प्रत्यक्ष रूप में उनमें दिखाई देती थीं। बाबा कभी धोबीघाट की सेवा में, कभी सब्जी काटने में

या अनाज साफ करने में, बच्चों का उमंग बढ़ाने के लिए सहयोग देते थे। बच्चों से पूछते थे कि किसके यज्ञ की सेवा कर रहे हो और शिव बाबा की याद दिलाते थे। चलते-फिरते ज्ञान का मनन कैसे करें, यह भी सिखाते थे। बच्चे बाबा में माता तथा पिता दोनों का रूप देखते थे।

ज्ञान का मंथन करने की प्रेरणा

एक बार बाबा मुझे गौशाला में ले गए, वहाँ सिर्फ दो गायें थीं। एक गाय बैठी थी, तो बाबा ने कहा कि यह गाय बीमार है। हमने सोचा, बाबा गउओं का भी डॉक्टर है। बाबा ने वहाँ देखभाल करने वाले बच्चे को कहा कि इस गाय को यह खिलाना और यह दवाई देना। दूसरे दिन मुरली में बाबा ने कहा, गाय को भी इतनी अक्ल है कि घास खाने के बाद जुगाली करती है। अगर नहीं करती है तो समझो, बीमार है। बाबा भी तुम बच्चों को ज्ञान-घास खिला रहा है इसलिए दिन भर तुम्हें भी ज्ञान का मंथन करना चाहिए, नहीं तो समझेंगे कि बीमार हैं।

सत्य को समझाने में संकोच न करें

बाबा के अव्यक्त होने के पहले माउंट आबू में प्रदर्शनी लगाई गई थी। रोज शाम को हम प्रदर्शनी समझाने जाते थे। वापस आने के बाद बाबा पूछते थे कि बताओ जिज्ञासुओं ने कौन-से प्रश्न पूछे और आपने उनको क्या जवाब दिए? हमको संकोच होता था कि हम कैसे बाबा के आगे ज्ञान सुनाएँ। परंतु बाबा कहते थे, बच्ची, बताओ तो बाबा उस पर ठीक समझानी देगा। फिर दूसरे दिन बाबा मुरली में अच्छी तरह से समझाते थे कि कौन-से प्रश्न का कैसे जवाब देना है। बाबा कहते थे कि सत्य को समझाने में कभी भी संकोच नहीं करना है। जब तुम स्वयं ज्ञान के नशे से सुनाओगी तो सुनने वालों को भी नशा चढ़ जाएगा। ऐसे बाबा हमारा आत्म-विश्वास बढ़ाते थे।

आओ मेरे रूहानी गुलाब

नवम्बर, 1968 की बात है, मैं जयपुर से पार्टी लेकर आबू जा रही थी, मन में था कि मैं मुरली सुनने जल्दी पहुँचूँ लेकिन ट्रेन थोड़ी देर से पहुँची। तैयार होकर मैं धीरे-से छोटे हॉल में पीछे जाकर बैठ गई, करीब-करीब मुरली पूरी होने वाली थी। बाबा ने मुझे देख लिया था। जैसे ही मुरली पूरी हो गई, बाबा ने कहा, ''आओ मेरे रूहानी गुलाब, आओ बैठो मम्मा की गद्दी पर। देखो, जिन बच्चों को मुरली सुनने का शौक होता है वो ऐसे दौड़कर मुरली सुनने आते हैं।'' फिर बाबा ने कहा, ''ये रूहानी गुलाब है, ये बच्ची बाबा की बहुत सेवा करेगी। देश-विदेश में लाखों-करोड़ों मनुष्यात्माओं की सेवा करेगी। अनेकों को बाबा का वारिस बनाएगी।'' बाबा का यह वरदान सदा कानों में गूंजता है। उसी वरदान ने मुझे शक्ति दी है और सेवा करने में आगे बढ़ाया है।

उन दिनों मधुबन में ट्रेनिंग सेन्टर बन रहा था। बाबा मेरा हाथ पकड़कर उसे दिखाने ले गए। बाबा ने कहा, ट्रेनिंग सेन्टर तैयार हो जाने पर आपको यहाँ कुमारियों की ट्रेनिंग करानी है। बाबा का हाथ मेरे हाथ में था तो मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि यह हड्डी-मांस का हाथ नहीं है, इतना मुलायम जैसे कि रूई का हो और जैसे रूई में से भी किरणें निकल रही हैं, सारा शरीर ही लाइट का है। मैं उसी में खो गई। फिर बाबा ने मेरा ध्यान खिंचवाया। मुझे लग रहा था जैसेकि सूक्ष्म वतन वाले बाबा साकार में आ गये हैं। फिर थोड़े आगे बढ़े तो वहां एक स्थान पर मजदूर मशीन के द्वारा सीमेन्ट और बजरी मिला रहे थे। उसे दिखाकर बाबा ने कहा, बच्ची, ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों की ट्रेनिंग माना उनका जीवन मजबूत बनाना। जैसे मजदूर को मालूम है कि दीवार को मजबूत बनाने के लिए कितनी सीमेन्ट और बजरी चाहिए, ऐसे ही ब्रह्माकुमारी जीवन में चरित्र निर्माण के लिये ज्ञान के साथ-साथ दिव्य गुण और पवित्रता की शक्ति चाहिए। जैस वो भवन निर्माण किया जाता है, ऐसे ही यह जीवन निर्माण करना है।

विदेश सेवा पर जाना हुआ

सन् 1974 में मेरा विदेश सेवार्थ लंदन जाना हुआ। चार साल के बाद जब मधुबन आना हुआ तो दादी-दीदी ने बाबा को, बाबा के कमरे में आने का विशेष निमंत्रण दिया और बाबा आये। बाबा के कमरे में गद्दी पर मैं बाबा के सामने

बैठी। मैंने बाबा से कहा, ''बाबा, जरूर मेरे से कोई भूल हुई होगी क्योंकि मैं इतनी जल्दी-जल्दी मधुबन आती थी और आपसे मिलती थी लेकिन अब चार साल के बाद सम्मुख मिलन हुआ है।'' तब बाबा ने कहा, **''भूल नहीं हुई है। सागर की लहर दूर तक जाती है परन्तु सागर से बिछुड़ती नहीं है। जो कुछ सागर से दूर है उसको सागर में ले आती है। आप भी ज्ञान सागर की लहर हैं। जो बाबा के बच्चे दूर विदेश में चले गये हैं उनको सागर से मिलाने के लिए गई हो।''**

वर्तमान समय मैं जर्मनी के मुख्य सेवाकेन्द्र तथा रिट्रीट सेन्टर को संभालते हुए पूरे यूरोप की सेवा में संलग्न हूँ। समय-समय पर पाँचों महाद्वीपों में विभिन्न देशों में ईश्वरीय सेवार्थ बाबा निमित्त बनाते हैं। मीठे बाबा ने हर वर्ग की आत्माओं की सेवा कराई है। बहुत अच्छे अलौकिक अनुभव भी हुए हैं।

अब यही लक्ष्य रहता है कि बाबा की हम बच्चों से जो आशा है, वो पूर्ण करें। पालनहार बाबा ने हमें जो अनोखी पालना दी है वो अन्य आत्माओं को देकर, प्रभु से उनका मिलन कराकर नई सतयुगी दुनिया के वर्से का अधिकारी बनाएँ। ❖

पृष्ठ 16 का शेष...

बाबा, क्या मेरा योग नहीं है जो आपने मुझे नहीं बुलाया और आप चले भी गये। ऐसे ख्यालात पूरे दिन चलते रहे। रात को जब सोई तो सपने में देखा, बाबा बिल्कुल मेरे सामने बैठे हैं। मैं कह रही हूँ, बाबा, सब कह रहे हैं कि आप चले गये हो परन्तु मैं तो आपको यहीं देख रही हूँ। तब बाबा बोले, बच्ची, जो बच्चे मुझे दिल से याद करते हैं, मैं हर पल उनके साथ हूँ। बच्ची, बाबा कहीं गया नहीं है। बाबा के ये शब्द सुन कर आत्मा को गहरा सुकून मिला। इसी सुकून के साथ मैं बाबा की सेवा में निरन्तर तत्पर हूँ। मन में यही गीत गूँजता रहता है –

धन्य-धन्य हो गये हम प्रभु को भा गये।
गा रही है जिन्दगी काम उनके आ गये।।

श्रद्धांजलि

भ्राता जगदीश प्रसाद अग्रवाल जी का जन्म नवम्बर, 1931 में ग्राम खजरोली, जयपुर में हुआ। सन् 1957 से कोलकाता में सिल्वर स्टोर्क के नाम से आपने बनियान बनाना शुरू किया। सन् 1965 में फरवरी माह में आप ब्रह्माकुमारीज के सम्पर्क में आए। जयपुर वाले मदनलाल शर्मा जी आपके बचपन के साथी हैं और अभी तक भी साथी हैं। शर्मा जी अपने अनुभव से बताते हैं कि हम दोनों साथ ही पढ़े, साथ ही व्यापार में भागीदार रहे, एक साथ ही बाबा को पहचाना और घर-गृहस्थ में रहते दोनों एक साथ ही दिल से बाबा पर समर्पित हो गए। अनेक बार साकार बाबा से मिले, अनेकों बार अव्यक्त बापदादा से भी मिले। सभी दीदी-दादियों का बेहद स्नेह दोनों आत्माओं ने सदा प्राप्त किया। दोनों आत्माओं ने बाबा के अनेक स्थानों के निर्माण हेतु तन, मन, धन से सदा सहयोग दिया और देते ही रहते हैं।

पिछले लम्बे समय से बीमार होने के कारण जगदीश भाई जी कहीं आ-जा न सके परन्तु अन्तिम श्वास तक भी वही नशा, वही प्यार और दिल से बाबा-बाबा और बाबा ही कहते रहे। जो भी उन्हें देखते तो कर्मभोग पर कर्मयोग की विजय दिखाई देती थी।

जब भी ये दोनों साथी साकार बाबा से मिलते थे तो बाबा कहते थे कि ये तो मेरे कल्प पहले वाले 'आई वेल' (जरूरत के समय मददगार) वाले बच्चे हैं। जगदीश भाई जी ने 16 नवम्बर, 2017 को अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद ली। ऐसे त्यागी, तपस्वी, सच्चे दिल से सेवाधारी भाई जी को सम्पूर्ण दैवी परिवार विशेष स्नेह सुमन अर्पित करता है।

बाबा ने कहा, बहादुर बच्ची है

* ब्रह्माकुमारी पूनम, जयपुर (राजापार्क)

मेरे पिता जी (विजयशंकर भाई) एयर फोर्स में इन्जिनियर थे। उनका तबादला मद्रास से कानपुर में हुआ। कानपुर में मेरे लौकिक मामा रमेशचन्द्र गुप्ताजी और उनकी युगल कमला माता जी ईश्वरीय ज्ञान में आ चुके थे। जब माता-पिता कानपुर आये तो मामाजी उन्हें गंगे दादी जी से मिलाने कानपुर सेवाकेन्द्र पर ले गये। जैसे ही लौकिक माता जी (निर्मला दीदी) ने गंगे दादी जी को देखा तो उनको अपना स्वप्न याद आया। मद्रास में (जब मैं गर्भ में थी) तब माता जी को स्वप्न आया था कि उनके पास नदी में कमल के फूल पर सफेद कपड़ों में एक देवी आई है। गंगे दादी की तरह सफेद साड़ी, लम्बी बाँहों वाला सफेद ब्लाउज उसने पहन रखा है, खुले बाल हैं। उस देवी ने कहा कि मैं तुम्हारे पास आ रही हूँ। यह स्वप्न देखकर माता जी ने समझ लिया कि मुझे कन्या ही होगी। गंगे दादी को देखकर उन्हें लगा कि आने वाली कन्या इसी संस्था की ही कोई देवी है।

मेरी बच्ची, मेरे पास वापिस आ गई

इसके बाद (मेरे गर्भवास के समय ही) माताजी ज्ञान सुनने लगी और उनके जीवन में वैराग्य आ गया। बाद में बुलंद शहर (उत्तर प्रदेश) में सन् 1955 में मेरा जन्म हुआ। मेरे जन्म के बाद माताजी पुनः कानपुर में आई। ब्रह्मा बाबा बार-बार गंगे दादी को कहते थे कि उस परिवार को मधुबन लेकर आओ। गंगे दादी जब लौकिक माताजी को कहती थी कि चलो मधुबन, बाबा बुला रहे हैं तो वे कहती थी, मैं कैसे चलूँ, यह बहुत छोटी है। जब मैं दो महीने की हो गई तब लौकिक माता-पिता, गंगे दादीजी के साथ कानपुर से मधुबन बाबा से मिलने गए। हम मधुबन आये तो बाबा ने मेरे लिये एक नौकरानी रखी हुई थी ताकि वो मुझे संभाले और माता-पिता बाबा के साथ रहें। माता-पिता जब मुझे बाबा के सामने ले गए तो बाबा ने फौरन मुझे गोद में ले लिया और कहा, 'यह मेरी बच्ची, मेरे पास वापिस आ गई है।' इस तरह मैं बाबा की पालना में आ गई।

बाबा ने बनवाया बालभवन

जब मैं दो साल की हुई तब बाबा को विचार आया कि कानपुर में एक बालभवन बनाया जाये जहाँ छोटे-छोटे बच्चों को रखा जाये। कानपुर में उस समय पाँच नए युगल ज्ञान में आए थे, उनके छोटे-छोटे बच्चे थे। बाबा चाहते थे कि ये मातायें ईश्वरीय सेवा करें और उनके बच्चे बालभवन में आ जायें। बालभवन बनने के बाद माताओं ने अपने बच्चों को वहाँ रख दिया और वे सेवाकेन्द्रों पर सेवा करने चली गईं लेकिन माताजी ने मुझे बालभवन में नहीं रखा। उनका मन नहीं था, लौकिक पिताजी (विजयशंकर जी) का मन था। वे मुझे एक दिन चुपचाप बालभवन छोड़ आये। तब बाबा बोले, जिस लक्ष्य से बालभवन खोला है, वो बाबा का लक्ष्य पूरा हो गया है।

बालभवन में मिली बाबा-मम्मा की पालना

बालभवन में हमको दादियों की, बाबा की और मम्मा की खूब पालना मिली। गंगे दादी, आत्मइन्द्रा दादी, प्रकाशमणि दादी की बड़ी बहन सती दादी – ये सब वहाँ थीं। वे बालभवन में हम बच्चों को शिक्षा देती थीं, ए,बी,सी,डी, क, ख, ग आदि वहीं पर इन बड़ी दादियों ने हमको सिखाये। साथ-साथ ज्ञान की कवितायें, ज्ञान के गीत, ज्ञान के डान्स ये सब भी सिखाये जाते थे। समय-

प्रति-समय बाबा-मम्मा बालभवन आया करते थे। जो भी युगल थे उनको बाबा लक्ष्मी-नारायण बनाते थे, फिर ये सभी रास करते थे। हम बच्चों को प्रिन्स-प्रिन्सेज बनाया जाता था। प्रिन्स-प्रिन्सेज रूप में हम गुब्बारे लेकर बाबा के सामने नाचते थे, रास करते थे। बाबा बालभवन में हम बच्चों के साथ लूडो खेलते थे, साँप-सीढ़ी खेलते थे और भी कई खेल बाबा हमारे साथ खेलते थे।

खेल-खेल में शिक्षा

खेल-खेल में भी बाबा ने हमें मजबूत बनाया। अगर कोई बच्चा खेल में हारकर रोने लग जाता था, तो बाबा कहते थे, छी-छी, यह रो रहा है। रोना अच्छा नहीं है। हार तो होती ही है खेल में। इस प्रकार बाबा ने खेल द्वारा भी शिक्षा दी। बाबा हम बच्चों की विभिन्न कलाओं, योग्यताओं से बहुत खुश होते थे। फिर बाबा ने कहा कि अब मैं इन बच्चों को पूरे भारतवर्ष में भेजूँगा, स्थान-स्थान पर जाकर ये बाबा की सेवा करेंगे। मैं तो ढाई साल की थी, कोई बच्चा तीन साल का था। वहाँ पर एक भाई थे, उनके रेलवे पास से बाबा ने हम चार बच्चों को भारत के विभिन्न सेवाकेन्द्रों पर भेजा। उस समय सेवाकेन्द्र तो गिने-चुने थे लेकिन कहने में तो आयेगा कि बाबा ने हमें भारत का भ्रमण कराया। अलग-अलग सेवाकेन्द्रों पर जाकर हम बाबा के ज्ञान के गीत-कवितायें गाते थे, बाबा की सिखाई बातें बताते थे, डान्स करते थे तो लोगों को बहुत खुशी होती थी कि देखो, छोटे-छोटे बच्चों को कितना अच्छा सिखाया है, सुन्दर संस्कार दिये हैं।

शिक्षा के साथ स्वास्थ्य पर ध्यान

बालभवन करीब 7 साल चला, जहाँ हम पले और बड़े हुए। बाद में बाबा ने बालभवन बंद करा दिया और बच्चों को कहा कि अब आप माता-पिता के साथ सेवाकेन्द्रों पर रहो। बालभवन में रखकर बाबा ने हमें पूरी तरह नष्टोमोहा बना दिया। बाबा ने कहा, अब सेवाकेन्द्र के वातावरण में रहो, सेवाकेन्द्र की सब बातें सीखते जाओ, पढ़ाई भी करो। निर्मला दीदी को जयपुर में ब्रह्मा बाबा ने सन् 1965 में भेजा व मुझे भी सेवा का वरदान देकर साथ में भेजा। निर्मला दीदी ने राजस्थान के बड़े-बड़े जिलों में सेवा का विस्तार किया। मैंने साथ में रहकर शिक्षा पूरी की व बाबा के यज्ञ की वाचा, कर्मणा सेवा भी की। फिर बाबा समय-प्रति-समय चिट्ठी द्वारा हमारा हाल पूछते रहे कि कैसे चल रहे हैं? कैसे पढ़ रहे हैं? सेवाकेन्द्र पर रहते-रहते मैंने साइकोलोजी में मास्टर डिग्री प्राप्त की। बाबा हमारी शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य पर भी पूरा ध्यान देते रहे। एक बार मैं बीमार हुई तो बाबा ने मधुबन से मक्खन, शहद और बादाम भेजे। एक बार जब बहुत छोटी थी तब मुझे तेज बुखार हुआ था। ब्रह्मा बाबा मुझे गोदी में लेकर एक घंटा बैठे रहे। बाबा की गोदी में रहने से बुखार पूरा गायब हो गया। इस तरह बाबा ने स्वास्थ्य पर भी बहुत ध्यान दिया।

मुझे बाबा ने श्रवणकुमारी बनाया

लौकिक पिताजी विजयशंकर भाई बीच में यज्ञ से दूर हो गये थे। दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे कहा, एक बार कैसे भी उनको मधुबन लेकर आओ। मैं युक्ति से लाई। अव्यक्त बापदादा से जब मिले तब बाबा ने मुझे श्रवणकुमारी का टाइटल दिया। यह पार्ट मैंने अन्त तक बजाया और विजयशंकर भाई कुछ समय बाद मधुबन निवासी हो गये।

मम्मा ने दिया पत्र का जवाब

बाबा मेरे लिए बार-बार कहते थे, 'बच्ची कब बड़ी हो रही है, कब बाबा की सेवा में लगेगी? बहादुर बच्ची है, इसको बहुत कुछ करना है, बाबा के कार्य को आगे बढ़ाना है, कोटों में कोई और कोई में भी कोई है यह।' इस तरह बाबा उमंग-उत्साह दिलाते रहते थे। जब हम बनारस में थे तो बड़ी बहनें बाबा-मम्मा को चिठ्ठी लिखती थीं। मैंने सोचा, मैं भी एक चिट्ठी लिखूँ। सब मेरे पर हँसने लगे कि तुझे क्या जवाब मिलेगा? फिर भी मैंने मम्मा को चिठ्ठी लिखी और पूछा, 'मम्मा, आप मुझे कितना प्यार करती हो?' मम्मा ने जवाब दिया, 'तुम जितना शिवबाबा को करती हो।'

किसी भी सेवा के लिए ना नहीं करना

जब बाबा अव्यक्त हुए, तब मैं दसवीं कक्षा में थी। अव्यक्त बाबा ने कहा, 'बच्ची अब तुम मुरली सुनाया करो।' मैंने कहा, 'बाबा, मैं कैसे सुना सकूँगी?' बाबा ने कहा, 'नहीं, तुमको सुनानी है।' बाबा ने एक प्रॉमिस लिया कि कुछ भी हो, कोई भी सेवा मिले, कभी भी ना नहीं कहना। मैंने प्रॉमिस को ध्यान में रखते हुए मुरली सुनाने की सेवा की। फिर और बड़ी हुई, मधुबन में पुनः अव्यक्त बाबा से मिली, बाबा ने मनोहर दादी को कहा, 'इन्हें शिविर कराने के लिये अवसर दो।' तब मैं बी.ए.प्रथम वर्ष में थी। मुझे बहुत संकोच हुआ कि मैं कैसे मधुबन में नयों का शिविर कराऊँ? बाबा ने कहा, 'बच्ची, एक बार कराओगी तो तुमको विश्वास बैठ जायेगा, तुम करा लोगी।' बाबा ने अपने सामने ही मधुबन में मेरे से सेवा शुरू करवाई और मुझमें विश्वास भरा, मेरा संकोच दूर किया, स्टेज फियर बिल्कुल खत्म कर दिया। फिर दिल्ली में जब बड़ा मेला लगा तो जगदीश भाई ने कहा, मैंने पूनम का भाषण आबू में सुना है, उनको दिल्ली में भी भाषण करना है। इस प्रकार हमारे बड़ों ने, बड़े स्थानों पर हमें मौका दिया बोलने का।

सन् 1977 से मैंने जोधपुर, अलवर, सिकर, जैसलमेर आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवा का कदम बढ़ाया और सन् 1980 से जयपुर में ईश्वरीय सेवाओं में उपस्थित हुई। वर्तमान में 75 सेवाकेन्द्रों और उपसेवाकेन्द्रों का संचालन बाबा करा रहे हैं। मेरे जीवन की धारणा है कि कभी किसी के बारे में नकारात्मक नहीं सोचना है, सर्वप्रति शुभभावनायें रखनी हैं। खुश रहना है, सबको खुश रखना है। एक बाबा की लगन में मगन रहना है। बाकी तो करनकरावनहार बाबा को जो मुझसे कराना होगा, कराएँगे। ❖

जब...बाबा ने जगाया

डॉ. प्रमेन्द्र देशवाल,
प्रधान सम्पादक 'आर्यपुत्र', रुड़की

दोपहर में नींद की गहरी खुमारी ले रहा था। सपने में एक वृद्ध, सफेद कपड़ों में खड़े दिखायी दिये, बोले, कब तक सोयेगा? मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा। सोचा, कौन थे? मेरे दैहिक बाबा भी सफेद कपड़े पहनते थे परंतु वे पगड़ी बांधते थे। उनको गए तो 20 वर्ष हो चुके हैं। ओह! यह तो बाबा ब्रह्मा जी थे। मन परेशान हो गया। सीधा रेलवे स्टेशन वाले ब्रह्माकुमारीज सेवाकेन्द्र पर गया। तीन दिन का शिविर किया और फिर शिक्षक ब्र.कु.शिवकुमार जी से पूछा, आप शराब वगैरा तो नहीं छुड़वाते? वे बोले, और भी कुछ पकड़ना हो तो आप पकड़ सकते हो, हम कुछ भी नहीं छुड़वाते। अभी तीन माह बीते थे कि एक दिन मेरे शिक्षक पुनः मिल गये, बोले, डॉक्टर साहब, पैग-सैग तो खूब लगा रहे होंगे। मैंने कहा, क्यों शर्मिन्दा करते हो, चमत्कार हुआ है, मन ही नहीं करता, बस, स्वयं को अन्दर-बाहर से पवित्र बनाने की धुन लगी है। अब तो प्याज खाना भी छोड़ दिया है। बाबा का दूसरा चमत्कार! कुछ ही माह बाद सितम्बर, 2016 में मीडिया कान्फ्रेन्स के बहाने बाबा ने अपने शान्तिवन में भी बुला लिया। उस अलौकिक जगत से कौन वापसी चाहता है? मैं स्वयं को दुनिया का सबसे सौभाग्यशाली समझता हूँ।

कैसे हुई मुरली लिखने की शुरुआत

* ब्रह्माकुमार शान्त कृष्णा, शान्तिवन

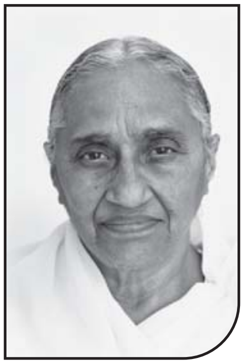

क्या आप जानते हैं, यज्ञ में मुरली लिखने की शुरुआत कैसे हुई? इसकी निमित्त हमारी प्यारी दादी रतनमोहिनी जी बने। यह भी एक दिलचस्प प्रसंग है। साकार बाबा एक दिन गार्डन में टहल रहे थे। दादी रतनमोहिनी जी एवं अन्य एक बहन गार्डन में बैठे कुछ लिख रहे थे। बाबा पीछे से अचानक आए, देखा, बच्ची कुछ लिख रही है। बाबा को देखकर दादी जी थोड़ा घबरा गई। फिर बाबा ने पूछा, बच्ची, क्या लिख रही हो?

दादी – बाबा , वो हम..वो हम…।

बाबा – बताओ बच्ची, क्या लिख रही थी?

(दादी बाबा को लिखा हुआ दिखाती है)

दादी – बाबा यह आज की मुरली है। आलमाइटी बाबा से हमने जो मुरली सुनी, वे प्वाइंटस् लिखे हैं।

बाबा – अच्छा, आलमाइटी बाबा के प्वाइंटस्!

(बाबा पन्ने पलटते हैं)

बाबा (खुश होकर) – यह तो बड़ी अच्छी बात है। बाबा के जो अनन्य बच्चे दूर-दूर रहते हैं, उनके लिए यह गर्म-गर्म हलुवा है। बाबा सभी बच्चों को भेजेगा ये। बाबा को ही पढ़ना इतना अच्छा लग रहा है तो बच्चों को कितना अच्छा लगेगा। जिन्होंने ये महावाक्य नहीं सुने, उनके लिए ये हीरे के समान हैं, यह एक-एक ज्ञान-रत्न उनका पद्मापद्म भाग्य बनायेगा।

उसके बाद बाबा ने दादियों को नियुक्त किया मुरली लिखने के लिए। इस विधि से मुरली लिखना और फिर सेवाकेन्द्रों पर भेजना प्रारंभ हुआ। बाद में ईशू दादी शार्टहैण्ड लिखने लगे, कार्बन पेपर से कॉपी निकालते थे, फिर लिथो से भेजना प्रारंभ हुआ।

दादी प्रकाशमणि जी के साथ दादी रतनमोहिनी सन् 1953 में पहली बार विदेश सेवा पर जापान गये। उस समय यज्ञ में बेगरी पार्ट चल रहा था। बाबा को बच्चों की फिकर हुई कि बच्चों को ठीक से भोजन मिलता होगा या नहीं। इसलिए बाबा ने बच्चों को पत्र लिखा, बच्चे, विदेश की धरनी पर आपको खाने-पीने की दिक्कत आ रही होगी। इसलिए बाबा की यह राय है कि आप बच्चियाँ वहाँ मशीन से बने बिस्किट, ब्रेड आदि खा सकते हो।

दादियों ने बाबा को पत्र लिखा – बाबा, हम कुछ भी खाते हैं तो पहले आपको भोग लगाते हैं। यदि पहले आप इन्हें ग्रहण करें तो हम भी यहाँ खाना शुरू करेंगे। बाबा ने जवाब में पत्र लिखा – बच्चों का पत्र पाया, मन हर्षाया, आप दोनों बच्चे नियम-मर्यादाओं में पक्के हो, बाबा आफरीन देते हैं। वाह! राम को जीतने वाले मेरे लव-कुश बच्चे हो। इस तरह बाबा ने बच्चों को वरदानों से सुसज्जित किया। ❖

शीघ्र आवश्यकता

एस.एल.एम.ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग (शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड, राजस्थान) में एक असिस्टेंट अकाउंटेंट पुरुष/महिला की आवश्यकता है।

योग्यता : मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से बी.कॉम.

अनुभव : मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान में कम से कम तीन वर्ष का अनुभव

संपर्क करें: मो.08432345230

ई-मेल:slmgnc.raj@gmail.com

कलावान बनाने वाले बाबा

* ब्रह्माकुमारी इंद्रा, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

सन् 1968 में जब मैं पहली बार मधुबन में बाबा से मिलने गई तब मेरे शरीर की आयु 20 वर्ष थी। मेरे लौकिक भाई-भाभी ज्ञान में चलते थे, भाभी जी के साथ मधुबन में आई थी। उस समय तक, जीवन में क्या करना है, इसका कोई लक्ष्य नहीं था। मधुबन में 5-6 दिन रहे, बाबा से मिले, बाबा के साथ पिकनिक की, ब्रह्माभोजन किया, बहुत सुन्दर-सुन्दर अनुभव हुए, जिससे लगने लगा कि यही मेरा असली घर और बाबा ही असली पिता है। जब घर वापस जाने का समय आया तो हमारी पूरी पार्टी बाबा से मिलने और छुट्टी लेने उनके सम्मुख गई। तब बाबा ने अचानक मुझे पूछा, 'बच्ची, तुम बाबा के पास रहोगी?' मैंने तुरंत कहा, 'जी बाबा'। बाबा ने लौकिक भाभी को कहा कि बच्ची को यहीं छोड़ जाओ। बस वो दिन था और आज का दिन है, फिर कभी कोई दूसरा संकल्प आया ही नहीं। मन में पक्का हो गया, 'बाबा मेरे थे, मेरे हैं और मेरे ही रहेंगे।' यह थी बाबा की कृपा- दृष्टि की कमाल! जिस पर प्रभु की नजर पड़ गई, दूसरी किसी तरफ भी उसकी बुद्धि जा नहीं सकती। भगवान की नजरों के सामने जो आत्माएँ हैं वो इस नाटकशाला में सर्वश्रेष्ठ पार्टधारी हैं।

सिंधी भाषा सीखी

उसके बाद बहुत समय तक मधुबन में रहना हुआ। बाबा ने अनेक कलाओं से भरपूर किया। बाबा ने दादा विश्वरत्न जी को बोला कि बच्ची को सिंधी भाषा सिखाओ। फिर मैंने सिंधी भाषा में मुरली पढ़नी-लिखनी सीखी। एक बार बाबा ने मुझे बुलाया और कहा, 'बच्ची, सिंधी भाषा की मुरली पढ़ कर सुनाओ।' मैं बाबा को सुनाने लगी। तभी बाबा दूसरे किसी भाई से बातें करने लगे और मैं चुप हो गई। तब बाबा ने कहा, 'बच्ची सुनाओ, तुम चुप क्यों हो गई हो?' मैंने कहा, 'बाबा, आप उन भाई से बात कर रहे थे।' बाबा ने कहा, 'बच्ची, बाबा सुन रहा है, आप सुनाओ।' तब मैंने महसूस किया कि बाबा एक ही समय पर अनेक कार्य करने की क्षमता रखते हैं।

ग्रामोफोन चलाना सीखा

एक बार बाबा ने चन्द्रहास दादा जी को कहा कि बच्ची को ग्रामोफोन चलाना सिखाओ। सीखने के बाद मैं प्रात: बाबा की मुरली के समय या रात्रि क्लास के समय गीत बजाया करती थी। एक दिन वह रिकार्ड उल्टी तरफ से चल गया और उसमें गीत बज गया, 'मेरा जूता है जापानी.......।' अब मैंने ना तो वो बदला, ना ही बंद किया। बाबा ने मेरी तरफ देखा और मुस्कराए, फिर सभी को दृष्टि देने लगे। इस प्रकार भगवान के संग खाया, खेला, पढ़ा, सीखा......और 'तुम्हीं संग खाऊँ, तुम्हीं संग बैठूँ'– यह गायन साकार हुआ। दीदी मनमोहिनी के द्वारा भी बाबा ने मुझे अनेक कलाओं से सुसज्जित किया। भगवान को इस साकार दुनिया में अनेक कर्म करते-कराते देखा। धन्य हैं वो आत्माएँ जो साकार बाबा की पालना में पलीं। फिर बाबा ने मुझ आत्मा को अनेक स्थानों पर ईश्वरीय सेवा के लिए भेजा।

बाबा को सामने बैठे देखा

जब 18 जनवरी, 1969 को बाबा ने अपनी पुरानी देह का त्याग किया तब मैं दिल्ली (चाँदनी चौक) में थी। जैसे ही बाबा के अव्यक्त होने का समाचार सेवाकेन्द्र पर पहुँचा, चाँदनी चौक से सब भाई-बहनें मधुबन चले गए और मुझे सेवाकेन्द्र पर ही छोड़ गये। मैंने मन-ही-मन बाबा से कहा,

शेष पृष्ठ 11 पर

आत्मा के गुणों का गहरा अनुभव हुआ

* ब्रह्माकुमारी राज, लुधियाना (पंजाब)

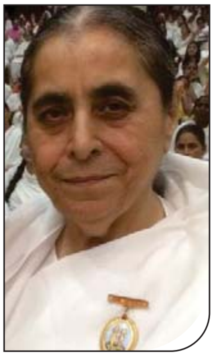

मेरा जन्म सन् 1941 में अखंड भारत के पंजासाहिब शहर (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ। बाद में हम राजस्थान में आ गए। सन् 1961 में मैंने बी.ए.का इम्तिहान दिया और उस समय ही ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की शाखा जयपुर में हमारे पड़ोस में खुली, उसमें लौकिक माता जी जाने लगी। उनको वहाँ बहुत अच्छा लगा। उन्होंने मुझे कहा, आप भी शाम के समय आश्रम जाया करो।

निराकार को पिता की तरह कैसे याद करें?

एक शाम के समय मैं और मेरी सखी वहाँ गये, तब प्रवचन चल रहा था। प्रवचन के अन्त में निमित्त बहन ने बताया कि परमात्मा निराकार हैं, उनको हमें पिता की तरह याद करना चाहिए। यह बात सुनकर मेरे मन में प्रश्न उठा कि निराकार को पिता की तरह कैसे याद करें? कोई सूरत या कोई तस्वीर होती है, तभी तो उनकी याद आती है लेकिन यदि परमात्मा निराकार हैं तो उन्हें हम पिता के रूप में कैसे याद कर सकते हैं? मैंने यह प्रश्न उनसे पूछा। उस समय निर्वैर भाई वहाँ सेवा के लिए आए हुए थे। उन्होंने मुझे कहा, ये बातें आपको ऐसे समझ में नहीं आयेंगी, आप सात दिन का कोर्स करें। मैंने सात दिन का कोर्स करना प्रारम्भ किया।

अशरीरी स्थिति का अनुभव

पहले दिन आत्मा का पाठ पढ़ाया गया जिसमें निमित्त बहन ने बताया कि आप शरीर नहीं, आत्मा हो। मैंने पूछा, क्या आपने कभी आत्मा को देखा है? बहन जी ने कहा, देखो, यह शरीर जड़ है, आत्मा चैतन्य है, आप आत्मा ही हो। उस समय तर्क-वितर्क नहीं होता था लेकिन बहन जी ने बहुत प्यार से समझाया। उनका समझाने का ढंग बहुत अच्छा था तो मैंने मान लिया कि चलो मैं आत्मा हूँ। जब सेवाकेन्द्र से घर जा रही थी तो रास्ते में ही मुझे अशरीरीपन का तथा आत्मा के गुणों का बहुत सुंदर अनुभव हुआ। आत्मा के सातों गुण – शांति, प्रेम, आनंद.......आदि सब मेरे अंदर इमर्ज होने लगे। मुझे महसूस होने लगा कि संसार की मनुष्यात्माओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि सभी समस्यायें समाप्त हो जायें यदि वे यह ज्ञान अपना लें तो।

निश्चय हुआ, ज्ञान सही है

दूसरे दिन परमात्मा का पाठ पढ़ाया गया। उसे पढ़ने के बाद नशा-सा चढ़ने लगा कि मैं इतने ऊँचे बाप की संतान हूँ। तीसरे दिन सृष्टि-चक्र के बारे में बताया गया। सृष्टि-चक्र का ज्ञान सुनते ही लौकिक पढ़ाई की कई बातें जैसे कि डार्विन का उत्क्रांतिवाद आदि बुद्धि में आने लगे। तभी निमित्त बहन ने मुझे त्रिमूर्ति नाम की एक पत्रिका पढ़ने के लिए दी। उसमें जगदीश भाई जी का एक लेख इसी विषय पर था। उसे पढ़ने के बाद सारे प्रश्न स्पष्ट हो गए और निश्चय हुआ कि यह ज्ञान सही है।

विघ्नों के बीच लगन

फिर मुरली सुनते-सुनते मन में आया कि अगर भगवान इस तरह धरती पर आ जायें तो यह तो बहुत बड़ी बात है। पर धीरे-धीरे ज्ञान की गुह्यता बुद्धि में भरती गई और निश्चय होता गया कि भगवान धरती पर आ चुके हैं। उनका ही दिव्य कार्य चल रहा है और हमें उनके इस कार्य में मददगार बनना है। निश्चय हुआ तो मैंने आहार शुद्धि, व्यवहार शुद्धि जैसी धारणायें शुरू कर दीं परन्तु परिवार वाले विरोध करने लगे। फिर भी मैं अपनी लगन में मगन थी और वे विघ्न डालने का अपना काम करते रहते थे। इन

बंधनों के दौरान भी कई अनोखे अनुभव हुए। आखिर बंधन ढीले होते गये और वो दिन भी आ गया जब साकार बाबा से सम्मुख मधुबन में मिलने का सुअवसर मिला।

अपनेपन से भरा प्यार

पहली बार जब बाबा से मिलना हुआ तो बाबा ने इतना प्यार दिया जो अवर्णनीय है। बाबा ने अपनी रूहानी गोद में मुझे समा लिया और मेरी आँखों से अविरल अश्रुधारा बहती रही। इसके बाद तो बाबा से कई बार सम्मुख मिलन हुआ। एक बार जयपुर लौटने के समय, मुझे बाबा के कमरे में बाबा से छुट्टी लेने जाने का परम सौभाग्य मिला। दोपहर का समय था। बाबा लेटे हुए थे। फिर भी बाबा ने गले लगाकर, अपनेपन से भरा प्यार दिया।

बाबा को देखते थे तो लगता था, बाबा ही सच्चे पिता हैं। बाबा चलते-फिरते लाइट-हाउस नजर आते थे। एक बार बाबा से मिलने गई तो बाबा ने गुरुग्रन्थ साहब के कुछ श्लोक सुनाए। उस समय तो मेरा कोई खास ध्यान उस ओर नहीं गया पर जब लुधियाना में सेवार्थ आई तो बाबा की वो मुलाकात याद आई और सरदार भाइयों की सेवा के प्रति बाबा की उस भावना ने मुझे सेवाक्षेत्र में बहुत बल प्रदान किया। ❖

जेल बन गयी रूहानी पाठशाला

ब्रह्माकुमार सचिन मालवे, येरवडा मध्यवर्ती कारागृह, पुणे

हर अकल्याण में कोई न कोई कल्याण छिपा होता है, यह मैंने अपने अनुभव से जाना है। मैं बचपन से ही भक्ति-मार्ग पर चल रहा था। मैंने इंजीनियरिंग के बाद एम.बी.ए.तक की शिक्षा हासिल की और एक प्राइवेट कंपनी में अच्छे पद पर नौकरी करने लगा। तनख्वाह भी अच्छी थी। माँ, पिताजी, भाई, युगल और एक बेटे के साथ मेरी जिंदगी अच्छी चल रही थी लेकिन एक बहुत दुखदायक दुर्घटना घटी और खून के इल्जाम में मुझे येरवडा जेल में आना पड़ा। मैंने जो गुनाह किया नहीं, उसका इल्जाम मेरे ऊपर थोप दिया गया, मैं टूट-सा गया। भगवान से मेरा विश्वास उठ गया। मैं अपने भाग्य को कोसने लगा।

जेल में परमात्मा से परिचय

अचानक एक दिन ब्रह्माकुमार भाई-बहनों का सात दिन के कोर्स के लिए जेल में आना हुआ। मैंने भी यह कोर्स पूरा किया। कोर्स करने के बाद लगा कि यह तो वही ज्ञान है जिसकी मुझे तलाश थी। मेरी खोयी हुई शान्ति जैसे वापस मिल गयी। मन के सभी सवालों के भी ठीक जवाब मिल गये। कर्मों की गुह्य गति के आधार पर मुझे मेरे दुखों के कारण का पता चला। आत्मा, परमात्मा का ज्ञान हुआ। मैंने ज्ञान के सहारे चलने की ठान ली।

मेरी हलचल भरी जिंदगी शांत होने लगी। चिड़चिड़ापन बंद हो गया। हर परिस्थिति को साक्षी होकर देखने की आदत बन गयी। दुख धीरे-धीरे सुख में परिवर्तन होता नजर आने लगा। मेरा नजरिया बदलने लगा। माँसाहार बंद कर दिया। ईश्वर को साक्षी मानकर मेरा हर कार्य सही होने लगा। ज्ञान में आने से पहले हर कार्य गलत परिणाम देता था। महसूस होने लगा, 'भगवान मेरा साथी है।'

अब मैं अमृतवेले योगाभ्यास करता हूँ और रोज मुरली सुनता हूँ। हर रोज निमित्त भाई आकर हमें बाबा के महावाक्य सुनाते हैं। हम 30-35 भाई पिछले लगभग दो वर्षों से रोज मुरली सुन रहे हैं। बाबा के सान्निध्य में जेल हमारे लिए एक रूहानी पाठशाला बन गई है।

सेवा के निमित्त

शिवबाबा ने मुझे ज्ञान देकर, सेवा के योग्य बनाकर सेवा के निमित्त बना दिया है। नये भाइयों को मैं शिव बाबा का ज्ञान समझाता हूँ। इससे मुझे बहुत आनंद मिलता है। मेरे शारीरिक एवं मानसिक कष्ट दूर हो गये हैं। अब सिर्फ 'एक बाबा, दूजा न कोई' इसी भाव से चल रहा हूँ। शिव बाबा मेरा बेड़ा जरूर पार लगायेंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। ❖

हर संकल्प पूरा किया भगवान ने

* ब्रह्माकुमारी अवधेश, भोपाल

बचपन से ही मुझे भगवान से बेहद प्यार था। रोज़ाना ही सपने में देवलोक में जाना, रहना, खाना-पीना – यह देखती रहती थी। लौकिक शादी से नफरत थी। मन में एक ही गीत गुनगुनाती रहती थी कि शिव संग ब्याह रचाऊँ, नहीं तो कुँवारी ही रह जाऊँ। देश की सेवा करना चाहती थी, इसी भावना को लेकर (10 वर्ष की आयु में) मैंने इंदिरा गाँधी जी को पत्र लिखा कि मैं देश की सेवा करना चाहती हूँ और आपके साथ रहना चाहती हूँ। तब श्रीमति इंदिरा गांधी जी का पत्र आया कि अभी तुम बहुत छोटी हो, अभी पढ़ो और बड़ी हो जाओ, तब मैं बुलाऊँगी।

मेरे विश्वास की आँखें खुली

कुछ समय के बाद मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिला और मैंने साकार बाबा को पत्र लिखा, बाबा, यदि आपके अंदर भगवान की सच में प्रवेशता होती है तो मैं आपसे मिलने आ रही हूँ, आप पहचान लोगे ना, बोलो बाबा, मैं आपसे मिलने कब आऊँ? प्यारे ब्रह्मा बाबा का पत्र आया, बच्ची, जितना जल्दी तुम आ सकती हो, आ जाओ। फिर मैंने रोज़ ज्ञान-क्लास करना तो शुरू कर दिया लेकिन मधुबन जाने में दो वर्ष लग गये। दसवीं, बोर्ड की परीक्षा देकर मैं बाबा के पास गई। पचास-साठ की पार्टी में मैं ही अकेली कन्या थी। बाबा अपने कमरे के गेट के सामने लाइन लगवाकर सभी को दृष्टि देते थे और टोली खिलाते थे। मैं सबसे पीछे छिप गई और मन में सोचा, भगवान मैं यहाँ आ गई हूँ। अगर आप सच में अवतरित होकर कार्य कर रहे हैं और मैं आपके काबिल हूँ तो सबसे पहले मुझे बुलाओ और टोली खिलाओ। सच में, बाबा ने उसी क्षण मुझे बुलाया, कहा कि पीछे बच्ची है, उसे आगे बुलाओ, पहले बाबा उसको टोली खिलायेगा। मैंने संकल्प किया और भगवान ने पहचान लिया। मुझे लगा कि यह कोई व्यक्ति नहीं, भगवान ही हो सकता है। मेरे विश्वास की आँखें खुलीं और मन गद्‌गद हुआ। यह मेरा पहला प्रयोग था। सफलता मिली।

भगवान ने मुझे दिव्य साक्षात्कार कराया

रात्रि 8 बजे बाबा के पास क्लास में गई। मन में संकल्प आया कि भगवान, आप ब्रह्मा बाबा के तन में कैसे प्रवेश करते हो, मुझे कैसे मालूम पड़े। मुझे बताइये कि आप कैसे आते हैं? इतने में क्या हुआ कि एकदम लाल लाइट, ब्रह्मा बाबा के चारों तरफ क्राउन के रूप में फैल गई और फिर सिमटते-सिमटते ब्रह्मा बाबा की भृकुटी में चमकने लगी। यह सुंदर दृश्य देखते-देखते मैं अंदर ही खो गई। बाबा की मुरली कानों में सुनाई दे रही थी परंतु मैं नीचे नहीं

थी। वह दृश्य आज भी भुलाये नहीं भूलता है।

भगवान ने मुझे मास्टर मुरलीधर बनाया

प्रात: क्लास में मैं हिस्ट्री हॉल में बैठी थी, हॉल फुल था। सबसे पीछे बैठी थी। मन में आया कि बाबा, मैं पहली बार आई हूँ और पीछे बैठी हूँ। मैं चाहती हूँ कि मैं आगे बैठी होती तो आपसे दृष्टि लेती, ताकत लेती। अब मैं कैसे आगे आ सकती हूँ। आप ही बिठा सकते हो। स्कूल में तो मैं आगे ही बैठती थी। क्या यहाँ यह सौभाग्य मुझे प्राप्त हो सकता है? आपको आश्चर्य लगेगा कि मुरली शुरू होते ही बाबा ने कहा, जो बच्ची आगरा से आई है, उसे आगे बुलाओ। प्यारे बाबा ने मुझे आगे बिठाया और कहा, बच्ची, मुरली बाबा सुनायेगा। इसके बाद स्टेज पर बैठकर तुम मुरली के प्वाइंटस् रिपीट करोगी और जितने दिन रहोगी, रोज़ मुरली रिपीट करोगी। कमाल की बात है कि बाबा ने मुझे स्टेज पर बिठाया। बाबा दरवाज़े पर खड़े रहे। मैंने प्वाइंटस् रिपीट किये और बाबा ने ताली बजाई। फिर तो सभी ने ताली बजाई और ऐसे सात दिन क्रम चला। इस प्रकार बाबा ने मुझे सात दिन में मास्टर मुरलीधर बना दिया।

भगवान ने मुझे अतीन्द्रिय सुख के झूले में झुलाया

सन् 1968, 24 जून को माउंट आबू पहुँची थी। वह समय ऐसा था जब ब्रह्मा बाबा अपनी संपूर्ण अवस्था की गहन तपस्या में लीन थे और झूला झूलने की प्रभु-लीला जैसे समाप्त हो चुकी थी। परंतु, यह बात तो शिवबाबा जाने और ब्रह्मा बाबा जाने। हमें क्या मालूम! हमारे मन में तो एक ही संकल्प चल रहा था कि अभी बाबा के साथ झूला नहीं झूलेंगे तो निश्चित ही सतयुग में श्रीकृष्ण के साथ भी नहीं झूलेंगे। हम रात्रि योग में बैठे तो बाबा को सूक्ष्म में यही संकल्प दे रहे थे कि बाबा, आप हमें अपना बना रहे हैं तो इस सौभाग्य से हम वंचित क्यों? अगले दिन जैसे ही बाबा की मुरली पूरी हुई, बाबा ने कहा, दीदी, अभी झूला डालो, बच्चों की दिल है बाबा के साथ झूला झूलने की। मेरी खुशी का तो ठिकाना न रहा। मैं सबसे पहले खड़ी हो गई। मन में विचार चलने लगा कि हो सकता है, बाबा ने औरों के संकल्प से झूला डलवाया हो, यदि मेरे संकल्प से डलवाया है तो मुझे पहले झुलायेंगे। बस, क्या देखती हूँ कि बाबा ने सबसे पहले मुझे ही झुलाया। दीदी-दादी ने झोंटा लगाया।

भगवान ने मुझे डॉक्टर की उपाधि से सम्मानित किया

मेरा दसवीं का रिजल्ट अखबार में आया और आगरा से महेन्द्र भाई साहब ने उसे मधुबन भेज दिया। वह साकार बाबा के हाथ में गया। बाबा ने मुझे बुलवाया और कहा, बच्ची, तुम्हें एक खुशखबरी सुनाता हूँ, बैठो। मैं बैठ गई। बाबा ने कहा, बच्ची, तुम फर्स्ट डिवीजन से पास हुई हो, तुम्हारा लक्ष्य क्या है? मैंने कहा, बाबा, मुझे डॉक्टर बनना है और ब्रह्माकुमारी भी। बाबा ने कहा, बच्ची, बहुत अच्छा लक्ष्य रखा है, आज कितनी बीमारियाँ हैं, कितने हॉस्पिटल हैं, कितने डॉक्टर हैं पर बीमारियाँ ठीक नहीं हो रही हैं। आज बाबा तुम्हें डॉक्टर की डिग्री देता है। तुम्हारे सामने जो भी पेशेन्ट आयेगा वह तन से, मन से स्वस्थ हो जायेगा। जहाँ तुम जाओगी वहाँ बाबा रूहानी हॉस्पिटल का बोर्ड लगवा देगा। बाबा ने मुझे ग्वालियर भेजा और महेन्द्र भाई साहब को कहा, बच्ची को ग्वालियर भेज रहा हूँ, बोर्ड लगाओ, 'रूहानी हॉस्पिटल'। मैं ग्वालियर गई। वहाँ सामने सरकारी सिविल हॉस्पिटल, नीचे मेडिकल की दुकान और ऊपर में आश्रम। अत: जब नीचे डॉक्टर नहीं मिलते तो भाई-बहनें बोर्ड देखकर सीधे ऊपर आ जाते और कहते, बहन जी, हमें बुखार है, सरदर्द है, पेट दर्द है। मैं कहती, बाबा, आपने भेज तो दिया, डॉक्टर की डिग्री भी दी परंतु मुझे तो अक्ल ही नहीं है कि अब क्या करूँ। बाबा कहते, योग कराओ, अमृत पिलाओ और कहो, बुखार ठीक हो जायेगा। इस प्रकार बाबा की रूहानी शक्ति से सब प्रकार की सेवा में सफलता मिलती गई। ❖

प्यारे बाबा ने मुझे नष्टोमोहा-निर्भय बनाया

* ब्रह्माकुमारी शीला, कोलकाता

मेरा लौकिक जन्म सन् 1932 में अमृतसर में भक्ति के संस्कारों वाले ब्राह्मण परिवार में हुआ। जब मेरी आयु लगभग 20 वर्ष की थी तब अमृतसर में एक धर्मसम्मेलन हुआ जिसमें अन्य महात्माओं के साथ-साथ सफेद वस्त्रधारी बहनें भी माउंट आबू से आई थीं। जब मैंने पहली बार इन बहनों को देखा तो ऐसे लगा जैसे आसमान से परियाँ धरती पर उतर आई हैं। वे ज्ञान-योग की क्लास एक भाई के घर में चलाती थीं जो हमारा नजदीक का रिश्तेदार था। इसलिए मैं और लौकिक माताजी उसके घर ईश्वरीय ज्ञान सुनने के लिये जाने लगे।

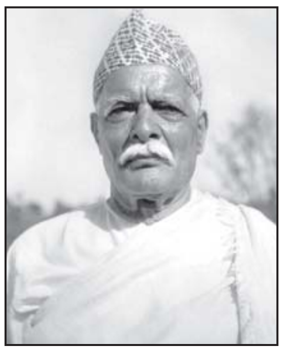

मेरे दिल में भगवान के प्रति अटूट प्रेम था। मैं सोचती थी कि यदि भगवान मुझे मायावी संसार के बंधनों से बचाये रखें तो मैं समझूंगी कि सचमुच वो हमारी बात सुनता है। मेरे हाथों की रेखा देखकर एक पंडित जी ने घरवालों को कह रखा था कि यह बड़ी होकर संसार नहीं बसायेगी और साधना में ही जीवन बितायेगी। इस कारण माता-पिता ने मुझे सत्संगों में जाने की छुट्टी दे रखी थी। एक दिन ज्ञान-योग की क्लास में मेरे से एक प्रश्न पूछा गया कि आपको संसार में सबसे प्यारी चीज कौन-सी लगती है। मैंने तुरंत कहा – भगवान। सचमुच भक्ति करते हुए भी मुझे भगवान से बहुत प्यार था।

बाबा से पहली मुलाकात

जब बाबा अमृतसर में आये तो मैं और माताजी दोनों क्लास में बैठे हुये थे। हम दोनों को ही प्यारे बाबा से विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ। माँ को पक्का निश्चय बैठ गया कि ब्रह्मा बाबा ही शिव बाबा के साकार माध्यम हैं। इस दृश्य को देख हम दोनों ही भाव-विभोर हो गये। इसके बाद मुझे माताजी की तरफ से ज्ञान सुनने की पूरी तरह से छुट्टी मिल गई। लौकिक पिताजी का देहांत होने के बाद भाई ने घर की ज़िम्मेवारी संभाली। वह मुझे कभी-कभी आश्रम जाने से रोकने लगा। एक दिन कुछ ज्ञानी-योगी मातायें हमारे घर आईं और उन्होंने मेरे भाई से पूछा कि क्या आश्रम पर जाने से आपकी बहन में कोई बुराई आई है। भाई ने कहा – 'मेरी बहन को एक अक्षर भी पढ़ना नहीं आता था लेकिन अब पढ़ाई सीख गई है। नम्रचित्त और आज्ञाकारी भी बन गई है, यह तो बहुत अच्छा हुआ है।' इसके बाद से उसकी तरफ से रोक-टोक खत्म हो गई।

मम्मा से पहली मुलाकात

मम्मा से पहली मुलाकात अमृतसर में हुई। उनको देखते ही ऐसा अनुभव हुआ कि हम बिछड़े हुए बच्चों को अपनी माँ मिल गई हो। हम लगभग 20-25 कन्याएँ थीं। कन्याओं को बंधनमुक्त करने के लिये निर्मलशान्ता दादी ने वहाँ सिलाई स्कूल खोला था। एक दिन मम्मा ने मेरी लौकिक माता जी से पूछा कि यह किसकी बच्ची है। माताजी ने उत्तर दिया कि यह तो भगवान की बच्ची है। तो मम्मा ने कहा कि इसे सेवा में भेज दो। मैंने कहा – 'मम्मा, मैं तो पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, सेवा कैसे कर सकती हूँ?' तब मम्मा ने बहुत प्यार से समझाया कि ऐसा कभी नहीं सोचना। बाबा का यह बेहद का यज्ञ है, सभी को अपनी-अपनी विशेषताओं से सेवा करनी है। तुम छोटी-छोटी कन्याओं को सब आत्माओं की ज्योति जगानी है, सारे विश्व की सेवा करनी है; मम्मा के ये बोल मेरे जीवन के लिये वरदान सिद्ध हुये।

मम्मा – सन्तोषी देवी

मम्मा दिव्य गुणों की साकार मूर्ति थी। एक बार जब वे अमृतसर में थी तो सौ के लगभग गीता-पाठी भक्तों ने

हंगामा शुरू कर दिया कि ब्रह्माकुमारियां तो देवी-देवताओं को नहीं मानतीं। तब मम्मा ने बड़ी निर्भयता से सच्चाई का परिचय देकर उनको संतुष्ट किया। मम्मा ने कहा कि हमारे आश्रम पर तो चित्र ही देवी-देवताओं के हैं। यहाँ की शिक्षा ही मनुष्य से देवता बनने की है। दैवी गुणों की धारणा यहाँ का मुख्य पाठ है और ये देवता फिर से भारत में साकार होने वाले हैं। इस सच्चाई को जानकर उनकी गलतफहमी दूर हो गई और वे संतुष्ट होकर लौट गये। इस प्रकार मम्मा सबको संतुष्ट करने वाली संतोषी देवी थी

वरदान भूमि पर जाने का परम सौभाग्य

मुझे मधुबन जाने का बहुत शौक चढ़ा हुआ था। बड़ी बहनों को देखकर विश्वास होता था कि इनको बनाने वाला कोई साधारण नहीं है, स्वयं भगवान ने इनको बनाया है। कई-कई घंटे बैठकर हम दादियों के अनुभव सुनते थे जिनसे हमें प्रेरणा मिलती थी कि इस तमोप्रधान दुनिया में रहते हुये भी कितनी सरलता से इन्होंने विकारों को जीत लिया और इस कारण वरदान भूमि मधुबन की तरफ मेरा आकर्षण बढ़ता जाता था। मेरी माताजी को भी बहुत नशा था कि मेरी बेटी को ब्रह्मचारी बहनों का संग मिला है, यह हमारे लिये परम सौभाग्य की बात है। कुछ समय बाद मुझे वरदान भूमि मधुबन जाने का सुअवसर मिला। उन दिनों एक पार्टी 15 दिन तक मधुबन में रहती थी। बाबा बच्चों के लिये मकान किराये पर लेता था। अभी उस मकान का नाम स्वदर्शन भवन रखा गया है। मुरली सुनने के लिये हम चार बजे से ही तैयारी में लग जाते थे। बहुत नशे में झूमते थे। क्लास के बाद फिर बाबा के कमरे में जाते थे। वहाँ भी बाबा हमें ज्ञान-रत्नों से श्रृंगारते थे और ऊँची-ऊँची प्रेरणाएँ देते थे।

भगवान मेरा साथी है

मधुबन से लौटने के कुछ दिन बाद मुझे जयपुर सेवाकेंद्र पर रहने की श्रीमत मिली। एक बार मैं जयपुर से मधुबन आयी तो बाबा ने मुझसे पूछा – ''बच्ची, तुम्हारे पास पहनने के लिये कपड़े हैं?'' मैंने शरमाते हुये कहा – ''हाँ बाबा।'' बाबा समझ गये कि कुछ कम कपड़े हैं। तभी उन्होंने स्टॉक से तीन जोड़ी कपड़े निकलवाकर मुझे दिये। यह सब देखकर मुझे आश्चर्यमिश्रित खुशी हुई कि मैं कितनी भाग्यशाली हूँ, कितनी खुशनसीब हूँ, भगवान मेरा साथी है, वह मेरा कितना ख्याल रखता है!

निडर बच्ची हो

इसके बाद मुझे कोलकाता में सेवा पर भेजा गया। मैंने दीदी से कहा – ''मैं पढ़ी तो नहीं हूँ, बड़े शहरों में ज्ञान-योग से पालना कैसे करूँगी?'' दीदी ने मेरी बहुत हिम्मत बढ़ाई और फिर प्यारे बाबा ने भी लिखा कि बच्ची, तुम पढ़े-लिखों की भी अपने अनुभव से पालना करने वाली निडर बच्ची हो, महावीर हो। बाबा के प्यार-दुलार भरे पत्र मुझे कई बार मिले। पत्रों में यही वरदान भरा हुआ होता था कि बच्ची, तुम पढ़े-लिखों से भी आगे जाओगी। जो काम वे नहीं कर सकते वह काम कर दिखाओगी, सिर्फ निडर होकर रहना, शिवशक्ति बनना। इन पत्रों द्वारा भाग्यविधाता बाबा ने सचमुच मुझे निडर बना दिया।

वे हुए शरमसार

एक बार जब मैं कोलकाता में थी तो ब्रह्माकुमारी रोज़ी बहन (दिवंगत) के पिताजी हाँगकाँग से कोलकाता आये। दिन का समय था। कुछ देर आश्रम पर ठहरकर वो चले गये। उनके तुरंत बाद कुछ पुलिस वाले पूछताछ करने के लिये आ गये कि यहाँ कोई विदेश का माल आदि तो नहीं आता। दीदी ने हमें निडर रहने के लिये कहा – ''आप डरो नहीं, उन्हें अपनी छान-बीन करने दो।'' फिर उन्होंने हमारे बक्सों की तलाशी ली जिनमें सिवाय कपड़ों के कुछ भी नहीं मिला। तब वे शरमसार होकर, माफी मांगकर चले गये। इस प्रकार बाबा ने निर्भय बनने का सुंदर अनुभव कराया।

पिछली लगभग आधी सदी से मैं कोलकाता म्यूजियम की सेवा पर उपस्थित हूँ। प्यारे बापदादा के मार्गदर्शन से और दीदी, दादियों की पालना के आधार पर सर्व की पालना कर रही हूँ। ❖

चित्तचोर के चरित्र

* ब्रह्माकुमार विजय कुमार, नयागंज, कानपुर

सन् 1954 में इलाहाबाद में महाकुंभ लगा था। उस कुंभ में अन्य संतों के साथ ब्रह्माकुमारी बहनें भी आबू से आई थीं। कानपुर के अरोड़ा जी ने बहनों की मधुर एवं सरल भाषा में वहाँ ईश्वरीय ज्ञान सुना, उन्हें बहुत अच्छा लगा। उन्होंने बहनों को कानपुर आने का निमंत्रण दिया। तभी से कानपुर में धर्मशाला में प्रवचन शुरू हो गया। बाद में बड़े ही धार्मिक उद्योगपति लाला हरबिलास राय के बंगले में बहनों को सेवार्थ स्थान दिया गया जहाँ लाला जी एवं उनकी युगल कर्मा देवी बड़े चाव से ईश्वरीय ज्ञान सुनते रहे।

पिता के साथ-साथ अलौकिक जन्म

सन् 1956 के दिसंबर माह में मेरे लौकिक पिता मोतीचंद एडवोकेट को भ्राता त्रिलोकचंद एडवोकेट तथा भ्राता संतराम एडवोकेट ने संस्था के बारे में परिचय दिया। मैं उस वक्त लगभग 11 वर्ष का था तथा अपने लौकिक पिता के साथ कचहरी जाता था, गंगा-स्नान के लिए भी जाता था। इस ज्ञान-यज्ञ में भी मेरा एवं मेरे पिता का एक साथ आना हुआ। शिवरात्रि पर लौकिक पिताजी माउंट आबू कोटा हाऊस में बाबा से मिलने आये। बाबा से मिलने पर वात्सल्य का सुखद अलौकिक अनुभव जब वापस आकर उन्होंने सुनाया तो मुझे भी बाबा के प्रति बहुत खिंचाव हुआ।

नाम मिला 'लाइन क्लीयर'

अगले वर्ष बाबा-मम्मा कानपुर में बाबू जी के बंगले में आये। गेट पर ही पंक्ति में भाई-बहनें खड़े होकर बाबा-मम्मा से दृष्टि लेते रहे। जब बाबा की दृष्टि मेरे पर पड़ी तो लगा कि हम इनसे मिल चुके हैं और ये हमारे अपने ही हैं। अगले दिन बाबा की मुरली समाप्त होने के बाद मैंने एक कविता सुनाई जिसके बोल थे – आल लाइन क्लीयर (All Line Clear)। यह कविता बाबा को बहुत पसंद आई जिस पर बाबा ने मेरा नाम ही 'लाइन क्लीयर' रख दिया। दादी रतनमोहिनी जी आज भी मुझे लाइन क्लीयर के नाम से पुकारती हैं।

लौकिकता में अलौकिकता

कानपुर के बाहरी इलाके में तब एलेन फॉरेस्ट था जो वर्तमान समय चिड़ियाघर बन गया है। उस फॉरेस्ट में एक डाकबंगला था, वहाँ बाबा-मम्मा के आने पर 15 दिन का कार्यक्रम रखा गया था। इस कार्यक्रम में बाबा-मम्मा के साथ बड़े ही घरेलू रूप से, निकटता से रहने का अवसर मिला। संदेशी बहन, जवाहर बहन, लच्छू बहन के साथ बाबा को निकटता से खेलपाल आदि करते देखा। खेलते वक्त भी बाबा अक्सर ध्यान खिंचवाया करते थे कि किसके साथ हो। उस समय जैसे कि लौकिकता में अलौकिकता दिखाई देती थी।

स्थूल कार्यों की सीख

साकार बाबा के होते माउंट आबू (मधुबन) में गर्मियों में ही भाई-बहनें जाया करते थे और मैं भी एक मास के लिए मधुबन सेवार्थ रहा करता था। तब केवल पोकरान हाऊस का एक पुराना बंगला था। उस समय दिल्ली, पंजाब, कानपुर, मेरठ आदि किसी भी सेन्टर से 8-10 की पार्टी आती तो टैंट लगाया जाता था। बाबा मुझसे कहते, लाइन क्लीयर बच्चे, पार्टी आ रही है, टैंट लगाना है। मेरी आयु

तब केवल 13 वर्ष ही थी। मैं क्या जानूँ टैंट लगाना। बाबा इंचीटेप लेकर मुझे पकड़ाते तथा सहारनपुर के भ्राता रामचन्द्र के साथ निशान लगाकर खूंटा लगवाते। बांस के सहारे टैंट खड़ा कराकर ठीक से बंधवाकर तैयार कर देते। इस प्रकार बाबा ने टैंट लगाना सिखाया। फिर निवार की चारपाई बुनना सिखाया। साँप का डर रहता था इसलिए धरती पर कोई नहीं सोता था, हर एक के लिए चारपाई तैयार की जाती थी।

कार्य-व्यवहार में ज्ञान की सीख

एक दिन ऐरोप्लेन की तरफ मेरा हाथ पकड़कर बाबा चले और आलू की कोठरी में ले गये तथा आलू की तीन श्रेणियाँ बनाना सिखाया। सख्त आलू, कमजोर आलू और सड़े-गले आलू अलग-अलग करके बताया कि **बुरे संग का रंग बहुत तेजी से लगता है। सड़ा आलू, अच्छे आलू को भी बहुत तेजी से सड़ा देता है अतः इसे अलग कर देना चाहिए। बाबा कार्य-व्यवहार में भी ज्ञान की सीख इस प्रकार देते कि जीवनपर्यन्त याद बनी रहे।** प्रातः मुरली क्लास के बाद बाबा-मम्मा नक्की लेक की तरफ या पहाड़ी पर या कभी जंगल की तरफ घूमने जाते। हम लोग नंबरवार बाबा के हाथ में अपना हाथ देते तो बाबा घड़ी-घड़ी पूछते, किसके हाथ में हाथ दिया है, कभी छोड़ेंगे तो नहीं? एक बार हाथ में हाथ देने के बाद निभाना पड़ता है, फिर किसी और का तो हाथ नहीं पकड़ेंगे? शिवबाबा याद है? इनको (ब्रह्मा को) याद नहीं करना। इस प्रकार की शिक्षायें सुनते-सुनते हम अशरीरी हो शिवबाबा को याद करने का अभ्यास करते, कभी-कभी तो बिल्कुल याद में गुम हो जाते।

स्नेह और शक्ति का दान

त्रिमूर्ति, झाड़, गोले का चित्र लेकर हम लोगों को बाबा रघुनाथ मंदिर में समझाने को भेजते, श्मशान घाट में समझाने भेजते। इस प्रकार नये-नये तरीके से सेवा में बिजी रख निरंतर कर्मयोगी बन बाप की याद का अभ्यास कराते। आई हुई पार्टी के बहन-भाई बाबा के साथ एक दिन ब्रह्मा भोजन करते थे। बाबा हॉल में सामने बैठते, हम लोग गोलाई में बैठ जाते। बाबा-मम्मा हम बच्चों को मुख में एक-एक कौर, दृष्टि देकर खिलाते। वह दृश्य याद आते ही आज भी तन और मन में करंट दौड़ जाता है कि कितना स्नेह, हम बच्चों को शक्ति के साथ दिया। जब बाबा से विदाई लेकर वापस जाते तो बाबा-मम्मा पिछले गेट से पेड़ तक छोड़ने आते, वह सीन तो कभी भूलता नहीं। पिस्ता, बादाम, इलायची देकर, जब तक ओझल नहीं होते तब तक रूमाल हिला-हिलाकर विदाई देते थे।

न्यारापन और अनासक्त भाव

एक दिन बाबा क्लास के बाद चेम्बर में बैठे थे, तभी एक टेलिग्राम आया जिसमें यशोदा माता (बाबा की लौकिक युगल) के शरीर छोड़ने का समाचार था। बाबा ने पढ़ा और तार फाड़कर फेंक दिया और बोले, 'बाबा मरे या अम्मा, हलुवा खाओ।' बाबा के मुखमण्डल पर ज़रा-सी भी कोई शिकन नहीं थी। इतना न्यारापन एवं अनासक्त भाव साधारणतः देखने को नहीं मिल सकता। बाबा के साथ हम लोग बैडमिन्टन और क्रिकेट खेलते तो भी बच्चों के साथ बच्चा बनकर हमें बहलाते और उनकी उस अवस्था में भी गजब की फुर्ती थी। इस प्रकार भक्तिमार्ग में 'पितुमात सहायक स्वामी सखा' का वर्णन तो बहुत सुना पर बाबा के अंग-संग रहकर इन सभी रूपों का स्वयं अनुभव किया जिसे कभी भुला नहीं सकते। उस चित्तचोर की कितनी बातें सुनायें, जो रग-रग में समा गया है। याद करो तो एक-एक चरित्र पुनः साकार हो उठता है जिसका वर्णन गूंगे का गुड़ है। ❖

दर्पण जब चेहरे का दाग दिखाता है, तब हम दर्पण नहीं तोड़ते बल्कि दाग साफ करते हैं। उसी प्रकार हमारी कमी बताने वाले पर क्रोध करने के बजाए कमी को दूर करना श्रेष्ठ है

सर्व रिश्तों का प्यार पाया एक बाबा से

* ब्रह्माकुमारी वीनू बहन, पाण्डव भवन (आबू पर्वत)

हम दो बहनें और माताजी अम्बाला में रहते थे, माता जी भक्ति बहुत करती थी। पिताजी बहुत समय पहले शरीर छोड़ चुके थे। अम्बाला में जब सन् 1952 में ब्रह्माकुमारी बहनें आई, सेवा की शुरूआत हुई तब ही माताजी (सरस्वती) को ज्ञान मिला। वे हम दोनों बहनों को साथ लेकर सेवाकेन्द्र पर जाने लगी। मैं उस समय सात साल की थी और सेवाकेन्द्र पर हर रविवार को जब नेष्ठा (योग, ध्यान) में बैठते थे तब मैं ध्यान में चली जाती थी। सन् 1954 में बाबा-मम्मा दोनों का अम्बाला में आगमन हुआ। बाबा से जब हम परिवार सहित मिले तो मैं बाबा से दृष्टि लेते-लेते ट्रांस में चली गई। दो घण्टे तक मैं बाबा की गोद में ट्रांस में ही थी। फिर धीरे-धीरे नीचे आई। बाबा ने मम्मा से कहा, बच्ची से पूछो, कहाँ गई थी? मैं कुछ बोल नहीं पाई। बाबा ने कहा, बाबा समझ गया, आप सूक्ष्मवतन से आई हो। बाबा चार दिन अम्बाला में रहकर दिल्ली चले आए। हम पूरा परिवार फिर बाबा से दिल्ली मिलने गए, वहाँ दस दिन मैं अकेली बाबा के साथ रही। माताजी वापस अम्बाला चली आई थी। दस दिन बाद जब वे दिल्ली मुझे लेने आई तब बाबा ने मुझे कहा, अभी आप अम्बाला जाओ, जब बाबा मधुबन जाएंगे तब आपको साथ ले जाएंगे। जब बाबा मधुबन जाने लगे तब मुझे अंबाला से बुलाया और मधुबन साथ ले गए।

बाबा के कर्मों से सर्व गुणों का साक्षात्कार

मधुबन में आने के बाद मैं सारा दिन बाबा को ही देखती रहती थी। बाबा को देख मुझे यह अनुभव होता था कि यह बाबा कोई ऑर्डनरी आत्मा या साधारण इन्सान नहीं है, यह बहुत ऊँची हस्ती है। ऐसा अनुभव होता था जैसेकि एक बाबा में ही सारे रिश्तों का प्यार भरा है। कभी वे माँ के रूप में दिखाई देते, कभी बाप के रूप में, कभी श्रीकृष्ण के रूप में, कभी शिक्षक के रूप में, कभी गुरु के रूप में, कभी वे बच्चे बन जाते, इस प्रकार मैं अनुभव तो करती थी लेकिन वर्णन नहीं कर सकती थी। जैसे गूँगा मिठाई खाता है पर मुख से उसका स्वाद बता नहीं सकता, मेरा भी ऐसा ही हाल था। इतने रिश्तों का अनुभव किया तो मेरी बुद्धि खुलती गई। सर्वगुण क्या होते हैं, बाबा अपने कर्मों से साक्षात्कार कराते रहते थे। कई बार ऐसा भी महसूस होता था जैसे कि बाबा बहुत ऊँचे-ऊँचे ग्लोब पर बैठे हुए हैं और सारे विश्व को देख रहे हैं। शिवबाबा ब्रह्माबाबा के तन में अवतरित हैं, यह जानने और पहचानने की शक्ति भी ब्रह्माबाबा के द्वारा ही मुझे मिली। इन्सानों को परखने की बुद्धि भी मुझे बाबा ने ही दी। मैं उनका कोटी-कोटी शुक्रिया मानती हूँ। मुझ नासमझ को अन्दर से इतना समझदार बनाया, कमाल है शिवबाबा की। उस समय मेरे सामने लौकिक की तरफ से कोई परीक्षा नहीं थी लेकिन अलौकिक परिवार में तो मुझे बहुत सारी परीक्षायें पास करनी पड़ी। बाबा सदैव टीचर बन करके मुझे सहयोग देते रहे कि बच्ची, ऐसे नहीं, ऐसे करो।

बाबा-मम्मा दोनों से मिला मार्गदर्शन

पहले-पहले छोटी थी तो कुछ साल मम्मा-बाबा दोनों की पालना मिली। भले छोटा परिवार था, ब्रह्मावत्सों का परिवार था लेकिन उनमें भी सबके स्वभाव, संस्कार अलग-अलग थे। उन सबके बीच रहते मुझे क्या ग्रहण करना है, क्या नहीं ग्रहण करना है, वो मार्गदर्शन मम्मा देती थी और समझाती थी कि यदि किसी ने कोई छोटी बात कह

भी दी तो तुमको कहाँ लगी? फ्रॉक में लगी? कहाँ लगी? उसको भूल जाओ। जब कहीं लगी ही नहीं तो भूल जाओ, इस प्रकार पुरुषार्थ में कदम आगे बढ़वाती थी। ब्रह्माबाबा का यह बहुत ध्यान रहता था कि यह एकदम पवित्र आई है, इसके ऊपर कोई दाग नहीं है, इस पवित्र बच्ची के ऊपर किसी की भी खराब नजर न लगे। बाबा मुझे दिशा देते रहते थे कि यह सही है, यह नहीं है, इधर जाना, इधर नहीं जाना है। जब देखते थे कि कोई गलत बोल रहा है और मैं उसको सुन रही हूँ तो फोरन कहते थे, यह नहीं सुनो। फिर मुझे मेरी आयु के अनुसार छोटी-छोटी सेवाओं में व्यस्त कर देते थे। छोटी सेवा अर्थात् कपड़े धोने, रोटी बनानी, सब्जी बनानी आदि-आदि। इसके साथ-साथ आटा गूंथना, कपड़े निचोड़ना, अलमारी ठीक करनी, घर की सेटिंग करनी, ये सब बातें बाबा-मम्मा दोनों सिखाते थे। बाबा कहते थे, अच्छी बातें सीखो। बाबा की बेटी निर्मलशान्ता दादी के पास एक साल मुझे कोलकाता भेजा। उनके साथ रहकर मैंने कई अनुशासन की बातें सीखीं। दादी किचन सजाने की ट्रेनिंग देती थी जैसे कि मसाले हैं, सब्जियाँ हैं, ये कैसे लगाने हैं और कहती थी, मसाले के डिब्बे पर बाहर पर्ची लगाओ ताकि दूर से पता पड़े कि इस डिब्बे में यह चीज है, जिससे सब डिब्बे खोलने न पड़ें। बाबा ने सब्जियाँ सेट करनी सिखाई, फल सेट करने सिखाये। जब भी पाण्डव भवन के बगीचे में से फल निकलते थे, तब कहते थे, बच्ची, इनको ऐसे सजाओ कि यह फल आज खत्म होगा, यह कल होगा, यह परसों खत्म होगा। फिर अंगूर तैयार होते थे तो मुझे टेबल के ऊपर चढ़ा करके हाथ में कैंची देते थे कि इस बेल से गुच्छे को काटकर ऐसे निकालो जो गुच्छे के अंगूर टूटें नहीं। फिर इसमें भी खेल कराते थे, कभी टेबल से नीचे उतारना होता था तो मुझे गोदी में लेके उतारते थे और कभी कहते थे, जम्प लगाओ। कभी कहते थे, अंगूर को मुँह से सीधा लो, हाथ से टच नहीं करो। इस तरह से खेल भी कराते थे।

मन की एकाग्रता से अच्छे परिणाम

जब ब्रह्माभोजन होता था तो उसमें भी बाबा मजा कराते थे, कहते थे, सलाद बनाना है, ऐसा सजा हुआ बनाकर लाओ जो बाबा देखकर तुम्हारे सलाद का फोटो निकाले। हर गुरुवार को बाबा बच्चों के साथ ब्रह्माभोजन हिस्ट्री हॉल (1962 में बनकर तैयार हुआ) में करते थे। मैं सलाद बनाती थी। चुकन्दर, गाजर और पत्तागोभी को कद्दुकस करके, शिवबाबा का आकार बनाकर, बीच में टमाटर के टुकड़े भरकर बाबा के आगे ले जाती थी। जो पार्टी में आये हुए भाई-बहनें होते थे, वे कहते थे, इस बच्ची का फोटो निकालो, यह देखो कितनी मेहनत से केक की तरह सलाद का कितना अच्छा शिवबाबा सजाकर आई है। फिर जब पिकनिक होती थी तो बाबा कहते थे, जाओ सूक्ष्मवतन में। बाबा दृष्टि देते थे, मैं ध्यान में चली जाती थी, फिर वहाँ से डांस सीखकर आती थी। फिर लच्छू दादी मुझे फ्रॉक आदि पहनाके सजा देती थी। फिर मैं डांस करती थी। ऐसे ही मम्मा जब टुअर से लौटती थी तो बाबा कहते थे, मम्मा का स्वागत करना है, जगदीश भाई आये हुए हैं, उनसे कविता बनवाके आओ, सुनाने की प्रैक्टिस करो, फिर मम्मा के आगे कविता सुनाना और डांस भी करना। फिर बाबा कहते थे, पहले मन को एकाग्र करो, उसके बाद यह सेवा करो तो परिणाम बहुत अच्छा मिलेगा। बाबा दृष्टि देते थे और मैं अपने मन को शिवबाबा पर टिका देती थी, बाबा मेरी बुद्धि को लम्बी करते जाते थे और मैं सीखती जाती थी।

हर बात में एक्यूरेसी सिखाई

जब बाबा की दुआएँ मिलती हैं तो अपनी भी बुद्धि खुलती जाती है। खाना बनाना सिखाने के बाद बाबा ने कहा, अभी तुम बाबा का खाना बनाओ। उन दिनों देशी घी से ही सब कुछ बनता था। यज्ञ में गौएँ थीं, हम बाहर का तेल आदि कुछ प्रयोग नहीं करते थे, केवल सरसों का तेल बाहर से आता था। खाना सारा देशी घी में बनता था। दूध भी घर का, मक्खन भी घर का, दही भी घर का, हलुवा भी

देशी घी का बनता था। जब बाबा की किचन में खाना बनाती थी तो बाबा पीछे से चुपके से आ जाते थे। बाबा सिखाते थे कि तुम इसमें पहले यह मसाला डालो, फिर यह डालो, फिर यह डालो। फिर कहते थे कि नमक बहुत कम डालना क्योंकि ज्यादा डल जायेगा तो किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा। कम होगा तो ऊपर से डाल लेगा। मैंने सीखा कि नमक सब्जियों में ज्यादा नहीं डालना चाहिए। मैंने बचपन में ही परख लिया था कि ब्रह्मा बाबा कोई ऑर्डनरी मैन नहीं हैं, ये एक बहुत ऊँची शक्ति हैं। उनके लिए अन्दर सम्मान भावना प्रगट होने लगी कि इनकी सेवा करूँ। कोई सब्जी बनाती थी तो दस बार हाथ धोती थी और बर्तन भी बहुत अच्छी रीति से साफ करती थी। किचन की अपने हाथों से सफाई करके, अगरबत्ती जला कर तब बाबा के लिये कुछ भी बनाती थी। फिर बाबा कहते थे कि बाबा एक्यूरेट है, तुम भी बच्ची एक्यूरेट रहना। भोजन देने में भी समय का पाबंद बनाया, 12 बजे समय है तो ठीक 12 बजे। क्लास में भी हमेशा बाबा एक्यूरेट पहुँचते थे, बड़े पंक्चुअल थे। क्लास में अगर हम गये और बाबा हमसे पहले आ गये तो हम नहीं जा सकते थे, पहली लाइन में भी नहीं बैठ सकते थे, इतना अनुशासन था। बाबा कहते थे, चप्पल-जूते सब लाइन से रखें, यह बात भी बाबा ने सिखाई।

ज्ञान ऐसे देना जैसे कि आप भरपूर हैं

यदि कोई मेहमान आता था तो छोटी होने के नाते एक मैं ही थी उसे सम्भालने वाली। बाबा कहते थे, उसको खाना भी खिलाओ और सात दिन का कोर्स भी उसी टेबल को साफ करके, वहीं कराओ। बाबा कहते थे, यह छोटी बच्ची ज्ञान की टिकलू-टिकलू बड़े-बड़े शेरों के आगे करेगी तो वे आश्चर्य खायेंगे कि इतनी छोटी-सी बच्ची, इतना अच्छा ज्ञान देती है। मैं खाना खिलाकर, टेबल पोंछकर वहीं त्रिमूर्ति, झाड़, गोला – ये चित्र रख देती थी। कोर्स कराने के बाद भागी-भागी जाकर बाबा की गोद में बैठ जाती थी। बाबा कहते थे, बच्ची, ज्ञान ऐसे देना जैसेकि आप भरपूर हैं। अगर वो कोई प्रश्न पूछता है और आपको उत्तर नहीं आता है तो यह जवाब दो कि अभी हमें इतना ही बताया गया है, वो सन्तुष्ट हो जायेगा। जो बाबा सिखाते थे, मैं जाकर वही बोलती थी। बाबा बाहर खड़े होकर सुनते भी थे, मुझे महसूस होता था कि बाबा बाहर खड़े सुन रहे हैं।

हर बात के लिए दिया उमंग-उत्साह

एक बार मैं क्लास में बैठी थी। मेरी तरफ मुँह करके बाबा बोले, वो जो वीनू बच्ची है ना, वो मीठी बच्ची, वो सृष्टि-चक्र के चित्र पर समझाएगी। फिर मैं बाबा के पास आकर बैठ गई। हिस्ट्री हॉल में तीन चौकियाँ होती थी, एक मम्मा की, बीच में बच्चों की, एक बाबा की। बीच वाली पर मुझे बिठाकर बाबा बोले, मीठी बच्ची, यह जो सामने चक्र का चित्र है ना, इसके ऊपर तुम समझाओ। बाबा प्रश्न करता है, तुम उत्तर दो। मैंने उत्तर दिये डर-डरके। बाबा ने कहा, डरो नहीं, बताओ, बताओ तो मैंने बताया। फिर एक बार कहा, इंग्लिश में समझाना सीखो सृष्टि-चक्र। वो सीखा और बाबा के आगे इंग्लिश में बोला। इस प्रकार बाबा ने हर बात के लिये बहुत उमंग-उत्साह दिया।

बाबा ने सिखाई हिन्दी

मेरे कपड़ों का ध्यान भी बाबा ही रखते थे। तब मधुबन में टेलर तो कोई था नहीं। घर से जो कपड़े ले आई थी, वो पुराने हो गए थे। पूना सेवाकेन्द्र में दादी जानकी जी रहती थी, उनके पास आशा नाम की एक सिन्धी बहन थी जो सिलाई का काम जानती थी। कराची से जब बाबा आये थे तो तीन सिलाई की मशीनें ले आये थे। आशा बहन ने मेरे पूरे साल के कपड़े सीले। कहने का भाव है कि इतने ऊँचे बाबा हम बच्चों का हर प्रकार से ध्यान रखते थे। फिर बाबा ने हिन्दी सिखाई और फिर मुरलियाँ भी लिखवाईं। बाबा कहते थे कि सेवाकेन्द्र से जो भी समाचार आता है, वो पत्र तुम रात्रि क्लास में आधा घण्टा सुनाना, आधे घण्टे बाद बाबा आयेगा। सेवाकेन्द्र से आये हुए सेवा-समाचार के पत्र

मैं पढ़कर रात्रि क्लास में सुनाती थी। पत्र में कई बार अंग्रेजी के शब्द आ जाते थे तो पढ़ते-पढ़ते मैं रुक जाती थी। बाबा कहते थे, विश्वरतन दादा के पास जाओ, इसके ऊपर हिन्दी लिखवाकर लाओ ताकि तुम लगातार पढ़ सको। हर महीने जो पत्रिका निकलती है (ज्ञानामृत) उसको लेकर बाबा के पास दिन में ग्यारह बजे जाती थी। बाबा गद्दी पर आधे लेटे रहते थे और मुझे पास बिठाकर, पत्रिका के किसी भी लेख के लिए कहते थे, तुम इसे रात को क्लास में सुनाना आधा घंटा। इस तरीके से ट्रेनिंग देते थे। मैं आधा घंटा समाचार या पत्रिका पढ़कर सुनाती थी।

मुरली लिखने की सेवा करवाई

फिर बाबा कहते थे कि तुमने हिन्दी सीख ली ना तो अब बाबा जो मुरली बोलते हैं उसे फाटाफट लिखो, फिर उसे फेयर करके बाबा को दिखाओ। फिर मेरे हिन्दी अक्षरों को ठीक कराते थे। दादा विश्वरतन से वेरीफाई कराते थे। उस समय मुरली लिखने का पेपर बहुत मोटा होता था। लिखने की पेन्सिल भी मोटी, नीचे कार्बन लगाते थे। मैं थोड़ा-थोड़ा करके लिखती थी। बीच में उठकर दूसरे काम भी कर लेती थी। पूरे तीन घंटे लग जाते थे रात्रि की पूरी मुरली लिखने में। मेरा लिखा हुआ साइक्लोस्टाइल मशीन के रोलर के ऊपर बाबा चिपकवाते थे। फिर विश्वरतन दादा हजारों कॉपियाँ निकालते थे। फिर बुकपोस्ट तैयार करने की ट्रेनिंग भी बाबा देते थे कि कैसे लिफाफे में डालना है, कैसे धागा बांधना है, कैसे स्टैम्प लगानी है आदि-आदि। फिर बाबा कहते थे, देखो बच्ची, आपने इतनी अच्छी हिन्दी सीख ली, अब सारे सेवाकेन्द्रों पर आपके हाथ के अक्षर गये हैं और सब पढ़ेंगे तो कितना भाग्य हो गया आपका। आपकी सेवा बेहद की हो गई।

गीतों का चुनाव करना सिखाया

बाबा ने रिकार्ड (गीत) बजाने सिखाए। सुबह बाबा की मुरली के समय कौन-सा गीत बजाना है, भोग में कौन-सा बजाना है, पिकनिक में कौन-सा बजाना है, योगभट्ठी के लिए कौन-से गीत बजाने हैं, यह सारी ट्रेनिंग बाबा ने दी। टेपरिकॉर्डर आया 1962 में, तब यह सारी ड्यूटी चन्द्रहास दादा ने ले ली। उससे पहले मेरी ड्यूटी थी। बड़े-बड़े बॉक्स होते थे उनमें मैं रिकॉर्ड रखती थी। एक बॉक्स में 30-40 रिकॉर्ड, 30-40 दूसरे में। फिर बाबा कहते थे, यह भोग के लिए है, ऐसा इसके ऊपर लिखो। ये योग के हैं, ये मुरली चलाने से पहले बजाने वाले हैं, सब पर लिखकर रखो। आज कौन-सा रिकार्ड बजाना है, वो बाबा से कमरे में सुबह पूछकर आती थी, तब बाबा मुरली के लिए तैयार हो रहे होते थे। मैं जब जाती थी तो बाबा कहते थे; मीठी बच्ची आई है, बाबा बतायेंगे कौन-सा गीत बजाना है। ऐसे 2-4 दिन बताया, उसके बाद कहा, तुम बहुत समझदार हो गई हो, अभी अपने आप ही बजाना।

सब प्रकार की सेवाएँ करवाईं

बाबा की यह भावना रहती थी कि मेरा हर बच्चा सब कुछ सीखे। उसे किसी की मोहताजी न रहे, आलराउण्डर बने। मुझे सबकुछ सीखने के लिये बाबा ने बोला, तो मैं सारा दिन बिजी रहती थी। परिवार छोटा होने के कारण दो घंटे एक जगह, फिर दो घंटे दूसरी जगह, फिर तीसरी जगह, ऐसे सब प्रकार की सेवा सीखी ताकि आलराउण्डर बन जाऊँ। जब मैं कहीं भी, कुछ भी कर रही होती तो बाबा वहाँ पहुँच जाते थे। बाबा को भी संकल्प आता था कि मुझे उस बच्ची के पास जाना है, वो क्या काम कर रही है? जो मैंने उसको काम दिया है वो कर रही है, सीख रही है या नहीं सीख रही है, बाबा पूरा ध्यान देते थे।

प्यार और एकता से भरपूर छोटा परिवार

उन दिनों माउण्ट आबू पूरा जंगल था, यहाँ लोग थे ही नहीं। यज्ञ में भी उस समय हम गिनती के 15 जने ही थे। यज्ञ में पैसे भी नहीं थे। उसी छोटे-से परिवार में हम बहुत-बहुत सुखी रहे। एक-दो के लिए बहुत-बहुत प्यार रहा और एकता रही। बाबा बीच में थे, तो बाबा के पास हमारी कोई गलत रिपोर्ट न चली जाये, बाबा को कोई कचहरी न करनी

पड़े, हम सब बहुत ध्यान रखते थे। बाबा कहते थे, स्वच्छता बाहर भी हो लेकिन अन्दर भी कोई खोट न हो।

बाबा कर्मों पर ध्यान खिंचवाते थे

उस समय हम बाबा में जैसे लवलीन थे। बाबा सावधानी देते थे, बिना पूछे कोई चीज खा लेता है तो महापाप है। समझो, आप दवाई देने की ड्यूटी पर हो और कोई आपकी दवाइयाँ बिना पूछे उठाकर ले जाए, केवल टोली की बात थोड़े ही है, हर चीज की बात है। बाबा कहते थे, जो कख का चोर वो लख का चोर। आज एक तिनका उठाया, कल उसकी बुद्धि जायेगी कि मैं यह भी उठाऊँ, वह भी उठाऊँ, मुझे कोई देख थोड़े ही रहा है। बाबा को चोरी की और झूठ बोलने की आदत बिल्कुल भी पसंद नहीं थी। बाबा ऐसे बच्चों को फिर देखना नहीं चाहते थे। कहते थे, देखो झूठ भरा है इस बच्चे में, सच है ही नहीं। यह बच्चा चोरी करता है, यह अच्छी बात नहीं है। जिसकी चीज चोरी हुई उसे संकल्प कितने चले!

छोटी-छोटी बातों पर ध्यान

रात के समय हम सो रहे होते थे तो बाबा कमरों में चक्कर लगाते थे, हरेक का बेड देखते थे, हरेक के पैर देखते थे। मेरे को तो खास कहते थे, तुम ऐसे लम्बे पैर करके बैठना ताकि मैं पैर देखूँ कि कितने साफ हैं! बाबा पैर इसलिए देखते थे कि तुम देव-देवियाँ हो, तुम ठाकुर हो, पूज्यनीय हो, तुम्हारी पूजा पैरों पर होती है और पैर तुम्हारे गन्दे होंगे तो पूजा कैसे होगी? पैरों की सफाई रखो। इतनी छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान रहता था बाबा का। उन दिनों कपड़े सब सूती होते थे। टेरीकॉट का तो नाम भी नहीं था। बाबा कहते थे, कपड़े को अच्छी तरह से निचोड़ो और जोर से झटक कर रस्सी पर सुखाओ। यह सब बाबा ही माँ बन सिखाते थे। बच्चे को माँ ही बताती है कि बेटा ऐसे नहीं, ऐसे करो, वैसे करो तो सारे सम्बन्ध बाबा में भरे हुए थे।

बाबा के हर कर्म में तपस्या थी

बाबा रात को ज्यादातर बिस्तर पर ही तपस्या करते थे। रात को ग्यारह बजे सोकर फिर दो बजे उठ जाते थे। उस समय लाल नहीं, हल्की नीली लाइट होती थी, उसमें बाबा बैठे हुए होते थे। बाबा का बिस्तर मेरे बिस्तर से दिखाई पड़ता था। बाबा के कमरे और उस कमरे के बीच में दरवाजा अभी भी लगा हुआ है। मुझे पता पड़ता था कि अभी बाबा दो बजे उठे हैं और हम जाते भी थे बाबा के सामने दृष्टि लेने उस समय, बाबा दृष्टि देते थे। बाबा के चलने में भी तपस्या, खाने में भी तपस्या, उठने में भी तपस्या, सबमें तपस्या ही तपस्या थी। ❖

नव वर्ष

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी., गुरुग्राम

उजियारों की भोर नई, जीवन की अब हर डोर नई।
नये वर्ष में उम्मीदों की, कलियाँ बस चहुँ ओर नई।।

आशाओं की धूप खिली हो, विश्वासों के दामन में।शुभ
भावों से गुंजित हर पल, अहसास जगाता हो मन में।।

नये वर्ष में आदर्शों से सिंचित सबकी आभा हो।
हर दिल मुख़्लिस पाक साफ, अरमानों का काबा हो।।

नूतनता का अहसास कराए, नया साल वो नग्मे गाए।
सुखद लालिमा इसकी बिखरे, निर्मलता का भाव जगाए।।

मुस्कानों का हर चेहरे पर, सदा अलौकिक पहरा हो।
स्नेह से सिंचित जीवन में, खुशियों का रंग सुनहरा हो।।

एक नया पल, एक नया तल, मात्र सफलता का जल हो।
शान्ति सद्भाव के नित्य तराने, गूँजे बस भूतल पर हों।।

मानवीयता का उच्च शिखर, मूल्यों से जाए जो सदा निखर।
नया साल नवरसता से, खुशबू गुणों की जाए बिखर।।

संस्कृति और संस्कारों का, श्रेष्ठ सदा उद्बोधन हो।
नया वर्ष स्वर-धारा का, मधुर-मधुर संबोधन हो।।

"ज्ञानामृत" से बदला जीवन

* डॉ.शेषमणि शुक्ल, रीवा (म.प्र.)

मेरी आयु 70 वर्ष है। सन् 2008 में विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त हुआ हूँ। पिछले 28 वर्षों से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का अनुशासित एवं सक्रिय स्वयंसेवक हूँ। सन् 2010 में हृदयाघात होने के कारण ओपन हार्ट सर्जरी (बाईपास) करवानी पड़ी। मध्यमवर्गीय लौकिक परिवारिक जीवन बिना विशेष कठिनाई के अत्यन्त सरलता के साथ सम्मानपूर्वक व्यतीत होता रहा। भक्ति-मार्ग में काफी रुचि रखता था इसलिए प्रतिदिन पूजा-पाठ, माला-जाप के साथ-साथ साप्ताहिक व्रत, दान-पुण्य, भजन-कीर्तन, गीतापाठ, चारों धाम की यात्रा, हवन और प्रयाग में संगम तट पर पूरे माघ मास का कल्पवास भी करता रहा।

विकार-मुक्त होने की तीव्र उत्कण्ठा जागी

मई, 2015 में रीवा में घर पर ही चारों धामों का हवन-पूजन धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इसके पश्चात् हमारी युगल मायके गई। बच्चे नौकरी पर बाहर गये, भाई अपने-अपने कार्यों में लग गये। घर में मैं अकेला रहा। पूजा-घर में जब भी जाऊँ, तो पूजा में मन लगने के बजाय अक्सर इन किए गए धार्मिक कर्मकाण्डों से क्या आध्यात्मिक उन्नति हुई, इस पर विचार-मंथन चलने लगा। अपने से पूछा, आखिर इनसे क्या प्राप्ति हुई, मैं कितना विकार-मुक्त हुआ, तो पाया कि जीवन में कुछ भी बदलाव नहीं हो सका है। वही कामवासना, वही क्रोध, वही लोभ, वही मोह, वही अहंकार। धार्मिक कृत्य करने वाले अन्य लोगों को देखता तो उन्हें अपने से भी इन विकारों में आगे पाता। आखिर कैसे इन विकारों पर विजय प्राप्त की जा सकती है, कैसे अपनी दृष्टि पावन बनाऊँ, वानप्रस्थ अवस्था क्या होती है, मन कैसे परमात्मा में मगन हो, कैसे तपस्वी-योगी जीवन बने आदि-आदि बातों को लेकर मन में तीव्र अन्तर्द्वन्द्व चलने लगा। कभी-कभी मन में आता कि सूरदास जी ने शायद इसलिए अपनी आँखें फोड़ी होंगी कि वे इनकी चंचलता की वृत्ति को रोक पाने में मेरी ही तरह असफल हुये होंगे। मन कहता, कौन हैं भगवान, कहाँ हैं, यदि हैं तो मुझे इन आँखों की घृणित वृत्ति से मुक्त करा दें।

'ज्ञानामृत' पत्रिका मिली पुलिया पर

इसी उथल-पुथल में था कि अचानक एक दिन टहलते हुये मुझे एक पुलिया के पास ज्ञानामृत पत्रिका पड़ी हुई मिली। उसमें मैंने हरदा (म.प्र.) की एक बहन का लेख पढ़ा कि मैं 17 वर्षों से पूर्ण पवित्र हूँ, ब्रह्मचर्य में हूँ। उसका 17 वर्ष का ही एक बेटा है और बहन की आयु 40-45 वर्ष से अधिक नहीं है। मुझे आश्चर्य हुआ। पवित्रता को प्राप्त करने के लिए उसने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के किसी सेवाकेन्द्र पर जाने का सुझाव भी दिया था। मैं अगले ही दिन सेन्टर पहुँच गया। वहाँ मिली ब्रह्माकुमारी बहन से मैंने कहा कि यहाँ जो भी होता है, वह मुझे सीखना है। मुझे तीव्र जिज्ञासा थी कि यहाँ यह सब कैसे होता है। बहन ने सात दिन का कोर्स कराया। कोर्स पूरा होने पर भी मन में कई प्रश्न अनसुलझे रहे परन्तु फिर भी आत्मा-परमात्मा के विषय में कई बातें पक्की हो गयी थीं जैसे कि मैं अविनाशी आत्मा हूँ, नश्वर शरीर नहीं; शरीर तो आत्मा का वस्त्र है। मैं अविनाशी, निराकारी आत्मा परमपिता परमात्मा शिव की संतान हूँ। परमात्मा एक हैं, अनेक नहीं।

वे अजन्मा, अभोक्ता हैं, जन्म-मरण से परे हैं, पतित पावन हैं, दुखहर्त्ता-सुखकर्त्ता हैं। वे नाम-रूप से न्यारे नहीं हैं, उनका नाम है शिव और रूप है ज्योतिर्बिन्दु।

विकार हुए छूमंतर

इसके बाद प्रतिदिन अमृतवेले योगाभ्यास और मुरली का नियमित पठन, मुझे बिन्दु (आत्मा) से बिन्दु (परमात्मा) के मिलन का सुखद अनुभव कराने लगा। चिन्तन चलने लगा कि मैं आत्मा शरीर में मस्तक पर भृकुटि के मध्य विराजमान हूँ, सामने आने वाले शरीर की आत्मा भी भृकुटि के मध्य में विराजमान है, हम दोनों आत्मा-आत्मा भाई-भाई हैं। परमपिता परमात्मा शिव की सन्तान हम सभी आत्माएँ भाई-भाई हैं। इसी चिन्तन से वृत्ति, दृष्टि, कृति पावन बन गई और विकार छूमंतर हो गए।

बाबा ने मुझ पर लुटाया पवित्रता का अखुट खजाना

जैसे किसी ने मुझे करंट द्वारा पूर्ण परिवर्तित कर दिया हो, स्वभाव-संस्कार, आचार-विचार खान-पान, रहन-सहन सब में लगातार परिवर्तन होता गया। एक छोटी-सी दृष्टि की अपवित्रता से परेशान होकर सेवाकेन्द्र पर गया था परन्तु प्यारे बाबा ने मुझ पर पवित्रता का पूरा अखुट खजाना लुटा दिया, मेरी झोली वरदानों से भर दी। ज्ञान-योग की पूर्ण धारणा से सेवा के अनेक मार्ग भी प्रशस्त कर दिए। शारीरिक कमजोरी और बीमार रहने के कारण ज्यादा भाग-दौड़ वाली सेवा नहीं कर पाता हूँ, उसके स्थान पर शक्तिशाली संकल्पों के माध्यम से पारिवारिक सदस्यों, मित्रों, संघ के स्वयंसेवकों एवं विश्व की समस्त आत्माओं को सकाश देने लगा हूँ। मेरे परिवर्तित जीवन की महसूसता अन्य आत्माओं को भी होने लगी है। शिवबाबा बार-बार मुरलियों में कहा करते हैं, मीठे बच्चे, प्रत्यक्षता का समय बहुत नजदीक है। बाबा की प्रत्यक्षता बच्चों के चाल-चलन और चेहरे से ही होगी। हम कितने हल्के और खुशमिजाज रहते हैं और सामने आने वाली दुखी आत्माओं को कितना अधिक से अधिक शान्ति का अनुभव करा सकते हैं, इसी आधार पर प्यारे बाबा की प्रत्यक्षता हो सकेगी।

हिम्मत की तो मिली बाबा की मदद

मात्र दो वर्षों में बाबा ने मुझे दो बार आबू पर्वत की यात्रा भी करा दी। पहली बार बाबा के घर शान्तिवन में, बाबा के कमरे में यह संकल्प किया था कि अपनी युगल को ज्ञानमार्ग में लाने का पूरा प्रयत्न करूँगा और अगली बार मधुबन तभी आऊँगा जब युगल साथ में होंगी। बाबा कहते हैं, बच्चे हिम्मत का एक कदम तुम्हारा और मदद के हजार कदम मेरे। यही हुआ, मधुबन से लौटने के बाद तीन महीने के अंदर ही युगल ने अपनी सात लौकिक सहेलियों के साथ बीमारी की हालत में भी घर पर ही सात दिन का कोर्स किया और अगले वर्ष युगल के साथ पुनः बापदादा के घर मधुबन आ गया। वहाँ युगल को विशेष अनुभूतियाँ हुईं। दर्द निवारक गोलियाँ खाकर ही वे अपना जीवन व्यतीत कर रही थीं। दो कदम चलना भी उनके लिए कठिन था किन्तु आबू आकर पूरा शान्तिवन, पाण्डव भवन, ओम शान्ति भवन, ज्ञान सरोवर, पीस पार्क, दिलवाड़ा मंदिर देखने में पूरे दिन दौड़ती रहीं। इसे क्या कहें! यह बाबा की कमाल नहीं तो और क्या है!

हाथ कभी नहीं छोड़ूँगा

ज्ञान में आने से पहले कभी-कभी ऐसा लगता था कि संघ में न आये होते तो जीवन अधूरा था लेकिन आज ऐसा लगता है यदि बापदादा के बच्चे न बने होते तो सचमुच ही यह जीवन, जीवन ही नहीं था। इसलिए आत्मा कहती है,

''लाख करे दुनिया तेरा साथ न छोड़ेंगे,
तेरा बनकर तुझसे ओ बाबा मुख न मोड़ेंगे।"

प्यारे बाबा, मैं आपका हाथ और साथ कभी नहीं छोड़ूँगा, बाबा, कभी नहीं। ❖

मौन और मुसकान – दो शक्तिशाली हथियार होते हैं। मुस्कान से कई समस्याएँ हल की जा सकती हैं और मौन रहकर कई समस्याओं को दूर रखा जा सकता है

पृष्ठ 4 का शेष...

क्षमाशीलता की साकार मूर्ति थे। उनके विरोधियों ने उन्हें बदनाम करने की भरपूर कोशिश की किन्तु उनके हृदय में घृणा उत्पन्न नहीं हुई। वे सभी लोगों की भलाई चाहते थे और अपने आलोचकों को अपना मित्र मानते थे क्योंकि आलोचक कतिपय विषयों की ओर उनका ध्यान आकृष्ट करते थे और उन्हें सतर्क करते थे।

बाबा का मुख्य उपदेश तथा संदेश

उनका मुख्य आदेश उस प्रवचन में भलीभाँति प्रकट होता है जो कि उन्होंने 18 जनवरी, 1969 की रात को दिया था। उन्होंने मनुष्य को 'निराकारी', 'निर्विकारी' तथा 'निरहंकारी' बनने का आदेश दिया। इसका अर्थ है स्वयं को इस सत्य में स्थिर कर लेना कि मैं निराकार आत्मा हूँ, विकार रहित हूँ तथा शरीर-चेतना से मुक्त हूँ। उन्होंने मनुष्य से यह भी कहा कि वह ईश्वर के साथ प्रेमपूर्ण तथा सचेतन संबंध रखे क्योंकि इसी से पिछली विकृतियों से आत्मा का छुटकारा हो सकता है और सभी दुखों तथा पीड़ाओं का निवारण हो सकता है।

स्वास्थ्य के लिए उनका सूत्र

उन्होंने स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण नियम बताया, ''कर्म के अनुल्लंघनीय नियम या विश्व-नाटक की सुनिश्चित योजना में दृढ़ विश्वास रखते हुए पवित्र और निश्चिंत जीवन बिताओ। शान्त और सन्तुष्ट रहो। संकट का सामना धैर्यपूर्वक करने की आदत डालो और चिन्ता करना छोड़ दो। यह भी बहुत महत्वपूर्ण है कि तुम **आत्मघाती क्रोध, भय, भोजनप्रियता तथा काम वासना को 'विष' समझ कर त्याग दो।''**

उनकी कार्य-प्रणाली तथा उनका लक्ष्य

बाबा के व्यक्तित्व में क्रियाशीलता के साथ सामंजस्य और संतुलन का सुखद संयोग था। उनमें प्रबल दिशा-बोध था। जो कुछ भी वे करते थे उसे वे प्रणालीबद्ध ढंग से, संकल्प सहित तथा प्रयोजन सहित करते थे। जो कुछ भी वे करते थे वह जन-कल्याण के लिए हुआ करता था। उसके पीछे कोई भी स्वार्थ-पूर्ण उद्देश्य नहीं होता था। बाबा हमेशा देना चाहते थे। वे लोगों को सत्कर्म की प्रेरणा देकर सभी का कल्याण करना चाहते थे। वे सभी लोगों को अपना आध्यात्मिक शिशु मानते थे और लोगों को उन्नति करते देखकर उन्हें वैसी ही प्रसन्नता होती थी जैसी किसी पिता को अपने शिशु को उन्नति करते देखकर होती है।

समय को वे मूल्यवान मानते थे

समय का जितना महत्व वे समझते थे उतना कोई नहीं समझ सका। वे बहुधा यह समझाया करते थे कि किस प्रकार यह विशिष्ट जीवन, जो कि विश्वचक्र में अन्तिम है, अति महत्वपूर्ण है। वे कहते थे, ''यद्यपि हमारा वर्तमान शरीर वासनाजन्य है तथापि वह हमें देवता के स्तर तक उठाने में एक उपयोगी उपकरण बन सकता है।'' इसलिए वे सभी से कहते थे कि शरीर की देखभाल ईश्वर की सम्पत्ति की भाँति करो और उसे एक 'न्यास' (Trust) समझो और कोई बुराई न तो करो, न सुनो और न देखो क्योंकि ईश्वर ने हमें यह शरीर दुरुपयोग के लिए नहीं दिया है। तथापि वे कहते थे कि जब ईश्वरीय सेवा का समय आये तो 'नहीं' मत कहो। जब कोई मनुष्य स्वयं को सेवा में लगा देता था तो वे उसे बहुत-बहुत प्रोत्साहित करते थे। ❖

आवश्यकता

ग्लोबल अस्पताल आबू रोड में जनरल फिजिशियन (MD Med.), जनरल सर्जन (MD Surgery), ओर्थोपेडिक सर्जन (MD Ortho.), न्यूरो सर्जन (Mch Neurosurgery) M.B.B.S. डॉक्टर्स, लैब टेक्नीशियन (D.M.L.T./B.Sc.M.L.T.), नर्सिंग ट्यूटर (B.Sc.Nursing, 2 yrs exp.) की आवश्यकता है।

उचित वेतन सुविधा। सम्पर्क करें - 9414024988 (सुबह 9 बजे से 5 बजे तक)

ईमेल : ghtcshantivan@gmail.com

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन

▸▸ फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये : **E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org**

Website: gyanamrit.bkinfo.in **Ph. No. : (02974) - 228125**